वर्ष 11 अंक 33

मार्च, 2015

जनेपन्यास
JNPT

अभिव्यक्ति

(जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास की गृह पत्रिका)

जनेप -एपेक द्वारा आयोजित
अंतरराष्ट्रीय समुद्री प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियाँ

✿ द्वैताद्वैत ✿

द्वैतं मोहाय बोधात्प्राग्जाते बोधे मनीषया। भक्त्यर्थं कल्पितं (स्वीकृतं) द्वैतमद्वैतादपि सुन्दरम्।
पारमार्थिकमद्वैतं द्वैतं भजनहेतवे। तादृशी यदि भक्त:स्वात्सा तु मुक्तिशताधिका।।

(बोधसार भक्ति. 42-43)

भाव - बोध से पहले का द्वैत मोह में डाल सकता है। परन्तु बोध हो जाने पर भक्ति के लिए स्वीकृत द्वैत अद्वैत से भी अधिक सुन्दर होता है। वास्तविक तत्व तो अद्वैत ही है, पर भजन के लिए द्वैत है। ऐसी यदि भक्ति है तो वह भक्ति मुक्ति से भी सौ गुनी श्रेष्ठ है।

संरक्षक

श्री नीरज बंसल, *आई.आर.एस.*
प्रभारी अध्यक्ष

मार्गदर्शक

श्री एन. के. कुलकर्णी
प्रबंधक (प्रशासन) तथा
राजभाषा अधिकारी

सम्पादक

सन्तोष कुमार पाठक
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

उप-सम्पादक

रोहित त्रिपाठी

सहायक सम्पादक मंडल

परितोष निगम
संजय पाटिल
अब्दुल गफ्फार शेख

टाइप सेटिंग

मनोहर जनार्दन म्हात्रे

अस्वीकरण

अभिव्यक्ति में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। आवश्यक नहीं कि जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्रशासन उनसे सहमत हो।

- सम्पादक

अंदर के पृष्ठों पर

02 प्रभारी अध्यक्ष की कलम से

04 सम्पादकीय

पत्तन समाचार 05

- सतर्कता सप्ताह
- टॉलिक पुरस्कार
- गणतंत्र दिवस
- अंतरराष्ट्रीय समुद्री प्रशिक्षण केंद्र

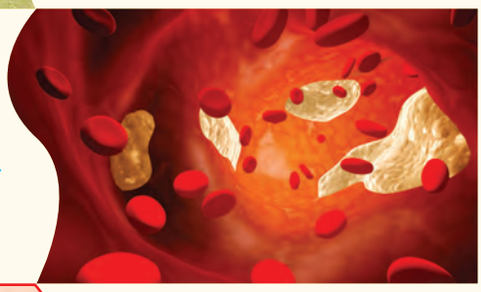

12 कामकाज
पत्तन में ईआरपी कार्यान्वयन
कंटेनर राजस्व अनुभाग की कार्य प्रणाली

16 स्वास्थ्य
प्रतिरक्षी तंत्र, कॉलेस्टेराल, उच्च रक्तचाप

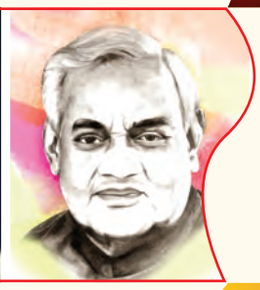

जल ही जीवन 21
बूंदों की संस्कृति

हमारे भारत रत्न 24
- मालवीय जी और हिंदी
- अटल जी की प्रतिनिधि कविताएँ

28 कहानी
बेटों वाली विधवा -प्रेमचंद

37 प्रेरक प्रसंग
लौटाया धन

38 हँसगुल्ले 39 आपके पत्र

प्रभारी अध्यक्ष की कलम से.....

इस वर्ष देश की दो महान विभूतियों को भारत रत्न दिए जाने की घोषणा की गई है - महामना मदन मोहन मालवीय और श्री अटलबिहारी वाजपेयी। दोनों का ही जीवन पूरी तरह से राष्ट्र के प्रति समर्पित रहा है। राष्ट्र सेवा के साथ-साथ दोनों ही लोकनायकों के जीवन की एक और विशिष्ट उपलब्धि रही है और वह है- हिंदी के प्रति अटूट प्रेम व समर्पण तथा उसे यथोचित सम्मान दिलाने के लिए अपरिमित प्रयास।

मालवीय जी के निरंतर व अथक प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप ही अंग्रेजों के शासन काल में सर्वप्रथम अदालतों तथा सरकारी काम काज में हिंदी तथा देवनागरी लिपि को स्थान मिल सका था। लोगों को अपने आवेदन पत्र तथा शिकायत आदि फारसी लिपि के साथ-साथ देवनागरी में भी देने का अधिकार प्राप्त हो गया था एवं पहली बार सरकारी कर्मचारियों के लिए हिंदी की जानकारी अनिवार्य बना दी गई थी। उन्होंने ब्रिटिश राज में हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाने, अहिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी का प्रचार प्रसार करने तथा देश में हिंदी के अखबारों का सूत्रपात करने की दिशा में भी अभूतपूर्व योगदान दिया है। यही नहीं विश्वविद्यालयों में हिंदी को एक विषय के रूप में सर्वप्रथम मान्यता दिलाने का श्रेय भी मालवीय जी को ही जाता है।

हमारे पूर्व प्रधानमंत्री, श्री अटल बिहारी वाजपेयी का हिंदी प्रेम तो जगजाहिर है ही। संयुक्त राष्ट्रसंघ के मंच से पहली बार हिंदी का उद्घोष उन्होंने ही किया था। अपने प्रधानमंत्री कार्यकाल के दौरान उन्होंने हिंदी को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर स्थापित करने में बहुत प्रयास किया है । वे स्वयं भी हिन्दी के अच्छे कवि व लेखक रहे

हैं। हिन्दी में दिए गए उनके ओजस्वी भाषण आज भी नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई है कि मालवीय जी की हिंदी के प्रति निष्ठा व समर्पण पर एक लेख तथा श्री अटल जी की कुछ प्रसिद्ध कविताएं भी 'अभिव्यक्ति' के इस 33वें अंक में प्रकाशित की जा रही हैं।

हिन्दी की प्रगति यात्रा संघर्ष के अनेक अनुभवों से भरी है। यहाँ तक आने में उसे कई प्रकार के आंतरिक और बाहरी विरोधों का सामना करना पड़ा है। किन्तु इस यात्रा में उसे नए पड़ावों तक पहुँचाने के लिए ऐसे महानुभावों सहित कई और भी समर्पित और अदम्य सेवी मिले हैं जिन्होंने उसे आज इस स्थान तक पहुँचाया है। लेकिन अभी भी हिन्दी को बहुत लंबा सफर तय करना बाकी है।

हिन्दी के ऐसे ही समर्पित सेवकों से प्रेरणा लेते हुए हम जनेप न्यास में उसकी उन्नति के लिए कार्य कर रहे हैं। प्रलेखन और तकनीकी, दोनों ही स्तरों पर हिन्दी की प्रगति हो,ऐसा हमारा प्रयास है। पत्तन में ईआरपी-सैप का कार्यान्वयन इसी दिशा में एक कदम है। इससे कर्मचारियों को ऐसा मंच मिलेगा जिसमें वे हिन्दी में न केवल कार्य कर सकेंगे वरन् उस कार्य को सैप पर साझा भी किया जा सकेगा जिससे अन्य कर्मचारी भी उसका उपयोग कर सकेंगे। हमें लगता है इससे राजभाषा हिन्दी की प्रगति को और बल मिलेगा।

मैं आशा करता हूँ कि इसी प्रकार हिन्दी के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए इस यात्रा के हम सब सहचर बनेंगे और उसे शीर्षतम सिंहासन पर आसीन करने में अपनी भूमिका निभा सकेंगे।

इस संकल्प और शुभकामना के साथ।

नीरज बंसल

नीरज बंसल
प्रभारी अध्यक्ष
ज ने प न्यास

सम्पादकीय

वह दिवस बड़ा ही पुनीत था जब दिनांक 14 सितम्बर, 1949 को भारत की संविधान सभा ने हिन्दी को संघ सरकार की राजभाषा अर्थात केन्द्र सरकार के कार्यालयों में कामकाज की भाषा स्वीकार किया था। किन्तु मेरे विचार से वह दिन हिन्दी के लिए बहुत घातक सिद्ध हुआ जिस दिन राजभाषा अधिनियम, 1963 पारित हुआ क्योंकि संविधान सभा ने जिस अंग्रेजी की यह कहकर जड़ें उखाड़ फेंकी थीं कि संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी, उसे मजबूत आधार मिला और वह फिर अपनी जड़ें जमाती चली गई।

यह ठीक वैसे ही हुआ जैसे जब एक बार इस धराधाम पर पुण्य इतना बढ़ गया था कि पाप मरने ही वाला था। वह अपनी अंतिम सांसें गिन रहा था। जब यह बात पुजारियों और पादरियों को मालूम हुई तो वे बहुत घबड़ाए। उन्होंने आकर उसे जल पिलाया। बड़े स्नेह से उसके सिर पर हाथ फिराया। यह देखकर पाप को बड़ा गहन आश्चर्य हुआ। वह बोला तुम्हारे कारण ही तो आज मेरी यह दुर्दशा हुई है और तुम्हीं मुझे जीवन दान दे रहे हो। वे बोले अरे यार! अगर तू मर जाएगा तो हमें कौन पूछेगा।

राजभाषा विभाग की स्थापना हुई तथा उसके अंतर्गत अनेक विभाग बने। उनमें अनेक ऐसे पद बनाए गए जिन्हें समझा गया कि वे हिन्दी की प्रगति में सहायक होंगे। केन्द्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा का गठन किया गया जिसमें अनेक वर्ग के हिंदी अधिकारियों और अनुवादकों को केन्द्रीय सरकार के मंत्रालयों में नियुक्त किया गया। मंत्रालयों के अधीनस्थ कार्यालयों में भी अलग से विभिन्न श्रेणी के हिंदी अधिकारियों तथा अनुवादकों के पद बनाए गए हैं। इनकी संख्या हजारों में है तथा हिंदी अब इनकी रोजी-रोटी की भाषा बन गई है। लगभग सभी कार्यालयों में इन्हें आईसोलेटेड पद कहकर कार्यालय के कामकाज की मुख्य धारा से अलग रखा जाता है और तदनुसार अच्छी तरह से योग्य (एम.ए.पास) होते हुए भी इन्हें हिन्दी के अलावा अन्य पदों पर पदोन्नतियाँ नहीं दी जाती हैं। ऐसे में ये क्यों चाहेंगे कि अंग्रेजी कार्यालय से समाप्त हो जाए। फिर इन्हें कौन पूछेगा। कैसे इनकी नौकरी सलामत रहेगी।

यहाँ निश्चय ही दूरदर्शिता की कमी रही है। कार्यालय के हिंदी पदों को भी उसके कामकाज की मुख्य धारा में ही जोड़कर रखना चाहिए था और इनके स्थानांतरण भी हिंदी के अलावा अन्य उपयुक्त पदों पर होने चाहिए थे। साथ ही, अन्य कर्मियों के स्थानांतरण भी अगर हिंदी अनुभाग में किए जाते तो आज कार्यालयों में अंग्रेजी का ऐसा बोलबाला न होता कि जब एक बार किसी कार्य विशेष में हिंदी की प्रयुक्ति कर दी जाती है तो उसके बाद भी वह अपने आप उस स्थान से हट जाती है। इसका कारण यह है कि आज हिंदी और अंग्रेजी में कार्य करने वाले दो खेमे बने हुए हैं। एक कर्मचारी हिंदी में कोई कार्य करता है तो उसके स्थान पर आने वाला दूसरा कर्मचारी उसी कार्य को अंग्रेजी में करना आरंभ कर देता है। किंतु यदि हिंदी पद और हिन्दी के अलावा अन्य पद एक साथ होते तो निम्नलिखित लाभ होते :

1) हिंदी कर्मी यदि अन्य प्रशासनिक कार्य करते तो वहाँ अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का प्रयोग करते तथा हिन्दी की प्रगति वेसे ही होती जैसे हिन्दी अनुभाग की फाइलों में अंग्रेजी दिखाई नहीं देती।
2) हिंदीतर अन्य पदों के कर्मचारियों को यदि हिंदी अनुभाग में कार्य करने की सम्भावना होती तो वे भी बेहतर रूप से हिन्दी का अध्ययन करते।
3) हिंदीतर अन्य पदों के कर्मचारी भी यदि हिंदी अनुभाग में कार्य करते तो वे भी हिन्दी से अच्छी तरह से वाकिफ हो जाते और जब उनका स्थानांतरण अन्य अनुभाग में होता तो भी वे हिन्दी में सहजरूप से कार्य करते।
4) आज जैसे दो अंग्रेजी तथा हिन्दी वर्ग न होते जिसमें कि एक वर्ग दूसरे को हीन समझता है और दूसरे वर्ग में भी पर्याप्त हताशा और दुर्भावना मौजूद है।

आज राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में लगभग सभी कार्यालयों में हिन्दी के न्यूनतम पद भी मौजूद नहीं हैं। जो पद सृजित होते भी हैं तो प्रशासनिक मंत्रालयों से उन्हें भरने की अनुमति नहीं मिलती। इस प्रकार कार्यालयों में हिंदी कर्मियों को पदोन्नति के अवसर ही नहीं हैं एवं उनकी पदोन्नति हो इसमें किसी की कोई रुचि भी नहीं है क्योंकि उन्हें उत्पादक न बनाकर मात्र हिंदी के लिए एकाकी रखा गया और नतीजतन वे कार्यालय के दोयम दर्जे के कर्मचारी बनकर रह गये। हिंदी कर्मियों से जो अपेक्षित कार्य है वह तो खूब करा लिया जाता है किन्तु उन्हें अपेक्षित लाभ नहीं मिलता है।

यह राजभाषा और राजभाषा कर्मियों की वर्तमान स्थिति आखिर कब तक ऐसी ही बनी रहेगी। कब हम सब एक दूसरे को आत्मसात करेंगे। कब हम सब मिलकर जी जान से राजभाषा की प्रगति में जुटेंगे और उसे देश की एकमात्र सम्पर्क भाषा और राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करेंगे।

मेरे इन्हीं कुछ प्रश्नों के साथ 'अभिव्यक्ति' का यह 33वाँ अंक हिंदी प्रेमियों को सादर समर्पित है। आशा है वे इस पर अपनी सारगर्भित प्रतिक्रियाएँ देने में विलम्ब नहीं करेंगे।

■ सम्पादक

व्यवसाय :

1) जनेप न्यास ने अक्तूबर, 2014 से दिसम्बर, 2014 तिमाही के दौरान कुल 15.44 मिलियन टन कार्गो का प्रहस्तन किया। पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान 15.06 मिलियन टन कार्गो का प्रहस्तन किया गया था। इस प्रकार इसमें 4.69% की वृद्धि हुई है।
2) जने पत्तन ने अक्तूबर से दिसम्बर, 2014 के दौरान 11.13 लाख टीईयू कंटेनर यातायात का प्रहस्तन किया। इसमें से जनेप कं.ट. ने 2.92 लाख टीईयू, एनएसआईसीटी ने 3.10 लाख टीईयू और जीटीआईपीएल ने शेष 5.11 लाख टीईयू का प्रहस्तन किया। पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान 9.74 लाख टीईयू कंटेनर यातायात का प्रहस्तन किया गया था। इससे कंटेनर यातायात में पिछले वर्ष की तुलना में 14.27% की वृद्धि हुई है।
3) इस अवधि के दौरान पत्तन ने 16.10 लाख टन तरल कार्गो का प्रहस्तन किया। पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान प्रहस्तित 14.75 लाख टनों के यातायात की तुलना में यह 9.16% अधिक है।
4) पत्तन ने 1.68 लाख टन शुष्क बल्क कार्गो (सीमेंट) का प्रहस्तन किया। यह पिछले वर्ष की इसी अवधि में प्रहस्तित 1.96 लाख टन की तुलना में 14.27% कम है।
5) इस वित्तीय वर्ष की तीसरी छमाही में 0.05 लाख टन वियोजित बल्क कार्गो का प्रहस्तन किया गया। पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान प्रहस्तित यातायात की तुलना में वियोजित बल्क में 81.03% की कमी आई है। पिछले वर्ष इसी अवधि के दौरान 0.27 लाख टन का प्रहस्तन किया गया था।

महत्वपूर्ण अतिथि :

राज्य पर्यावरण मूल्यांकन समिति का जनेप न्यास में आगमन :

भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय द्वारा अनुमोदित पत्तन आधारित विशेष आर्थिक क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देने के लिए राज्य पर्यावरण मूल्यांकन समिति 22 नवम्बर, 2014 को जनेप न्यास में आई। इस समिति के अध्यक्ष श्री टी. सी. बेन्जामिन, सेवानिवृत्त भा.प्र.से., एवं अन्य सदस्य श्री बलबीर सिंह, श्री एच एस सहगल, श्री मदन एस. कुलकर्णी एवं श्री पाटिल पत्तन में आए।

समिति को पत्तन प्रचालन क्षेत्र और वह भूमि क्षेत्र दिखाया गया जहाँ पत्तन आधारित विशेष आर्थिक क्षेत्र विकसित किया जाना है।

पत्तन भ्रमण के पश्चात समिति को मुख्य प्रबंधक (प्रशासन) एवं सचिव ने पत्तन गतिविधियों, प्रस्तावित विशेष आर्थिक क्षेत्र के कार्यान्वयन से होने वाले लाभ और पत्तन के नमूने का प्रस्तुतीकरण दिया।

समिति ने पत्तन द्वारा अल्प समय में प्राप्त सफलताओं की प्रशंसा की। समिति ने प्रस्तावित विशेष आर्थिक क्षेत्र के उचित कार्यान्वयन के लिए पत्तन सड़क पर जमाव रोकने के लिए उपाय भी सुझाए।

जनेप न्यास में सतर्कता जागरूकता सप्ताह

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में 27 अक्टूबर 2014 से 1 नवम्बर 2014 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस अवधि के दौरान 27 अक्टूबर 2014 को सुबह 11 बजे सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शपथ दिलाई गई। इस सप्ताह के दौरान जनेप न्यास के कर्मचारियों तथा जनेप न्यास के नगर क्षेत्र में संचालित दो स्कूलों - आईईएस जनेप विद्यालय एवं सेंट मेरी जनेप विद्यालय के

विद्यार्थियों के लिए निबंध लेखन, नारा लेखन एवं भाषण-स्पर्धा जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। 'भ्रष्टाचार से मुकाबला-प्रद्योगिकी एक संबल' विषय पर एक गृह-कार्यशाला भी 29 अक्टूबर 2014 को आयोजित की गई। उक्त कार्यक्रम में जनेप न्यास के 27 कर्मचारियों ने भाग लिया। 1 नवम्बर 2014 को आयोजित समापन समारोह की अध्यक्षता जनेप न्यास के अध्यक्ष, श्री एन.एन.कुमार, भा.रा.से. ने मुख्य अतिथि के रूप में की। इस अवसर पर जनेपत्तन के मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री सुशोभन बनर्जी, भा. पु. से. ने राष्ट्र के हित में लालच से बचने की आवश्यकता पर जोर दिया। श्री.एन.एन.कुमार ने दिमाग से लोभ के विचारों को उसी प्रकार दूर रखने के लिए सावधान किया जैसे बाग को सुरक्षित रखने के लिए माली मवेशियों को दूर रखता है। उन्होंने उपभोक्ताओं एवं सामान्य जनता से बात-चीत का रिश्ता कायम करने के लिए जनेप न्यास का फेसबुक अकाउन्ट शुरू किए जाने की भी घोषणा की।

जनेप न्यास को टॉलिक पुरस्कार प्राप्त हुआ

नवी मुम्बई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (टॉलिक) द्वारा राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास को वर्ष 2013-14 का प्रथम

पुरस्कार प्रदान किया गया। नवी मुम्बई टॉलिक में यह पुरस्कार पहली बार शुरू किया गया है तथा इसमें एक ट्रॉफी एवं प्रमाण-पत्र शामिल हैं। नवी मुम्बई एवं ठाणे के केन्द्र सरकार के कार्यालयों के वर्ग में इस पुरस्कार को पानेवाला जनेप न्यास पहला कार्यालय है। इस उपलब्धि के लिए जनेप न्यास के उपाध्यक्ष, श्री नीरज बंसल, भा. रा. से. सहित अध्यक्ष श्री एन.एन.कुमार, भा. रा. से. ने जनेप न्यास की ओर से इस पुरस्कार को ग्रहण करने वाले राजभाषा अधिकारी एवं प्रबंधक (प्रशासन) श्री एन.के.कुलकर्णी एवं सहायक प्रबंधक(राजभाषा) श्री संतोष कुमार पाठक को बधाई दी।

(सूत्र-विपणन अनुभाग)

बोलते चित्र:

जनेप अस्पताल के औषधि भंडार में कार्यरत अधीक्षक, श्री दत्तात्रेय श्रीगिरि अपने कार्य के अलावा चित्रकला में रुचि रखते हैं। उनके द्वारा बनाए गए चित्र मानो बोलते हैं। ऐसी प्रतिभा के धनी श्री श्रीगिरि के कुछ चित्र पाठकों के लिए प्रस्तुत हैं।

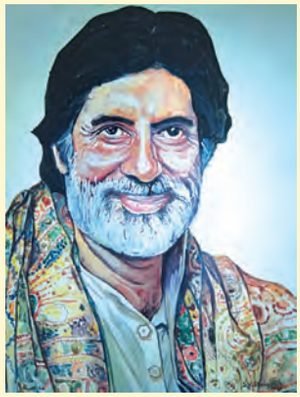

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में गणतंत्र दिवस समारोह

दि. 26 जनवरी, 2015 को भारत का 66 वाँ गणतंत्र दिवस जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर पत्तन के अध्यक्ष, श्री एन.एन.कुमार, भा.रा.से. द्वारा ध्वजारोहण किया गया। ध्वजारोहण के पश्चात

अध्यक्ष महोदय ने केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के जवानों तथा डॉग स्क्वाड, जने पत्तन के अग्निशमन कर्मियों और विद्यालय के छात्रों की सलामी परेड का निरीक्षण किया।

इस अवसर पर उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए अध्यक्ष महोदय ने पत्तन कर्मचारियों, पत्तन उपभोक्ताओं और उनके परिवारजनों तथा अन्य सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ दीं। अध्यक्ष महोदय ने उन सभी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों और सैनिकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जिन्होंने विदेशी शासकों से हमें स्वतंत्रता दिलाने के लिए अपने प्राण न्यौच्छावर कर दिए।

अपने भाषण के माध्यम से अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित जनसमुदाय को पत्तन के वर्ष 2014 की उपलब्धियों से अवगत कराया। साथ ही यह भी कहा कि पत्तन के कर्मचारियों तथा अधिकारियों के बिना पत्तन को इन उपलब्धियों को प्राप्त करना अंसभव था इसलिए उन्होंने पत्तन के सभी कर्मचारियों / अधिकारियों को हार्दिक धन्यवाद दिया। आगे उन्होंने कहा कि हमारे पत्तन ने वर्ष 2014 के दौरान लगभग 64.42 मिलियन टन

माल का प्रहस्तन किया है जो पिछले वर्ष के प्रहस्तन की तुलना में 3.06 प्रतिशत ज्यादा है। पत्तन ने वर्ष 2014 के दौरान 4.47 मिलियन टीईयू कंटेनर यातायात का प्रहस्तन किया है जो अब तक का रिकार्ड प्रहस्तन है। इस कीर्तिमान को हासिल करने के लिए उन्होंने पत्तन के कर्मचारियों, अधिकारियों, सुरक्षाकर्मियों एवं निजी टर्मिनल प्रचालकों को बधाई दी।

इसके बाद अध्यक्ष जी ने उन परियोजनाओं से सभी को अवगत कराया जो पत्तन की प्रहस्तन क्षमता को बढ़ाने के लिए आरंभ की जा रही हैं। उन्होंने बताया कि हमने मुख्य कंटेनर घाट पर 3 सुपर पोस्ट पैनामैक्स आकार की आरएमक्यूसी क्रेनें लगाने तथा 3 पुरानी आरएमक्यूसी क्रेनें उथले डुबाव घाट पर स्थानांतरित करने का आदेश दिया है। इससे पत्तन की क्षमता में 0.225 मिलियन टीईयू प्रतिवर्ष की वृद्धि होगी। यार्ड प्रचालन में सहायता के लिए भी हमने 6 आरटीजीसी क्रेनों के लिए आदेश दिया है। हमारा पत्तन देश का नंबर 1 कंटेनर पत्तन है और इसके विस्तार के लिए हमने कुछ महत्वपूर्ण परियोजनाएं हाथ में ली हैं जैसे कि पत्तन की उत्तर दिशा की ओर 330 मी. तक घाट का विस्तार, चौथे कंटेनर टर्मिनल का विकास, केंन्द्रीय पार्किंग प्लाज़ा, मूरिंग डॉल्फिनों का निर्माण। इसके साथ ही सुरक्षा उपाय के रूप में हमने हाल ही में मुख्य कंटेनर घाट, उथले घाट तथा आयात-निर्यात यार्डों पर खारे जल से अग्निशमन प्रणाली भी शुरू की है। यह प्रणाली पूरी तरह से स्वचालित है।

अध्यक्ष महोदय ने अपने भाषण में इस बात का विशेष रूप से उल्लेख किया कि हमारे लिए पिछला वर्ष अभूतपूर्व सफलताओं के साथ-साथ महत्वाकांक्षी योजनाओं के प्रारंभ से भरा रहा है। दि.16 अगस्त, 2014 को हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पत्तन का दौरा किया तथा विशेष आर्थिक क्षेत्र के साथ अन्य योजनाओं का उद्घाटन किया। हम कांडला पत्तन न्यास तथा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के साथ मिलकर 'इंडिया पोर्ट ग्लोबल कंपनी लि.' का निर्माण करने जा रहे हैं। इसके साथ ही जालना (औरंगाबाद) एवं वर्धा (नागपुर) में शुष्कपत्तन बनाने पर भी काम चल रहा है। महाराष्ट्र सरकार के साथ मिलकर नए पत्तन का निर्माण किया जाना भी प्रस्तावित है। पत्तन क्षेत्र में विशेष प्रशिक्षणों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए हम एंटवर्प पोर्ट के साथ मिलकर एक विश्वस्तरीय प्रशिक्षण केंद्र का निर्माण भी करने जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि सभी कर्मचारियों तथा अधिकारियों के सहयोग तथा समर्पित योगदान के कारण पत्तन को अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। 'ख' क्षेत्र में स्वायत्तशासी निकायों की श्रेणी में श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए 14 सितम्बर, 2014 को हिंदी दिवस के अवसर पर वर्ष 2012-13 का प्रतिष्ठित प्रथम इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार माननीय राष्ट्रपति, श्री प्रणव मुखर्जी के कर कमलों से राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में प्राप्त हुआ है। इसके अलावा इस दिशा में हमारे पत्तन को वर्ष 2013-14 के लिए उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु नवी मुंबई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (टॉलिक) द्वारा प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इसके साथ ही मैरीटाइम गेटवे ग्रुप द्वारा 'वर्ष का महापत्तन' पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। कंटेनर प्रहस्तन के क्षेत्र में शानदार निष्पादन हेतु मैरीटाइम एण्ड लॉजिस्टिक अवार्ड (माला) 2014 के लिए 'वर्ष का कंटेनर पत्तन' पुरस्कार भी प्राप्त हआ है।

इसके साथ ही मैरीटाइम क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए मुझे 'न्यूजमेकर आफ द ईयर' का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने पिछले 8 वर्षों से लगातार अखिल भारतीय एथलेटिक चैम्पियनशिप जीतनेवाली एथलेटिक टीम का अभिनंदन किया। साथ ही आईईएस जनेप विद्यालय तथा सेंट मेरी जनेप विद्यालय के उन सभी छात्र-छात्राओं का अभिनंदन किया जिन्होंने शिक्षा के साथ-साथ विविध प्रतियोगिताओं में उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है। अध्यक्ष जी ने आईईएस जनेप विद्यालय की चौथी कक्षा की कुमारी जिया गणेश गोंधली का विशेष अभिनंदन किया। जिसे गणतंत्र दिवस के अवसर पर भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय की ओर से नई दिल्ली में आयोजित चित्ररथ परेड में प्रदर्शन के लिए चुना गया है।

अपने भाषण के अंत में अध्यक्ष जी ने पत्तन की सुरक्षा को मजबूत करने में केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के योगदान का उल्लेख करते हुए ड्यूटी के प्रति उनकी ईमानदारी एवं समर्पण के लिए उनकी प्रशंसा कीऔर पुन: एक बार सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं देते हुए अपना भाषण समाप्त किया।

गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के जवानों ने हथियारों के पुर्जों का अल्प समय में पूर्ति के साथ संयोजन तथा उन्हें अलग करने का प्रदर्शन किया और सभी ने उनकी प्रशंसा की।

आईईएस जनेप विद्यालय तथा सेंट मेरी जनेप विद्यालय के छात्र - छात्राओं ने देशभक्ति पर रंगारंग कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया और कार्यक्रम संपन्न हुआ।

नम्र बनो, कठोर नहीं।

एक चीनी संत बहुत बूढ़े हो गये थे। जब उन्होंने देखा कि मेरा अन्तिम समय निकट आ गया है, तब अपने सभी भक्तों और शिष्यों को अपने पास बुलाया और प्रत्येक से कहा- 'तनिक मेरे मुँह के अन्दर तो देखो भाई ! कितने दाँत शेष हैं ?'

प्रत्येक शिष्य ने मुंह के भीतर देखा। प्रत्येक ने कहा - 'दाँत तो कई वर्ष पूर्व समाप्त हो चुके हैं महाराज ! एक भी दाँत नहीं है।'

संतने कहा - 'जिह्वा तो विद्यमान है ?'

सबने कहा - 'जी हाँ।'

संत बोले - 'यह बात कैसे हुई ? जिह्वा तो जन्म के समय भी विद्यमान थी। दाँत उससे बहुत पीछे आये। पीछे आनेवाले को पीछे जाना चाहिये था। ये दाँत पहले कैसे चले गये ?'

शिष्यों ने कहा - 'हम तो इसका कारण नहीं समझ पाते महाराज !'

तब संत ने धीमी आवाज में कहा - 'यही बतलाने के लिये तो मैंने तुम्हें बुलाया है। देखो, यह जिह्वा अब तक इसलिये विद्यमान है कि इसमें कठोरता नहीं है और ये दाँत पीछे आकर पहले इसलिये समाप्त हो गये कि ये बहुत कठोर थे। इन्हें अपनी कठोरता पर अभिमान था। यह कठोरता ही इनकी समाप्ति का कारण बनी। इसलिये मेरे बच्चो ! यदि अधिक समय तक जीना चाहते हो तो नम्र बनो, कठोर नहीं !'

अखिल भारतीय महापत्तन न्यास एथलेटिक चैम्पियनशिप प्रतियोगिता में जनेप न्यास की एथलीट टीम को लगातार आठवीं बार चैम्पियनशिप

महापत्तन क्रीड़ा परिषद के तत्वावधान में दि.16 से 18 नवम्बर, 2014 तक विशाखापट्टनम पत्तन न्यास में संपन्न अखिल भारतीय महापत्तन एथलेटिक चैम्पियनशिप में जनेप न्यास की टीम ने लगातार आठवीं बार चैम्पियनशिप जीतकर पत्तन का गौरव बढ़ाया। जनेप न्यास की महिला टीम ने 14 तथा 18 वर्ष के समूह में टीम चैम्पियनशिप जीती।

इस प्रतियोगिता में जनेप टीम की कुमारी फ्रान्सिस्का टोपनो (4 स्वर्ण, 1 रजत तथा 4 कांस्य) तथा 18 वर्ष तक के वर्ग में कुमारी श्वेता गुरुनाथ तांडेल (6 स्वर्ण, 1 रजत तथा 1 कांस्य) ने क्रमश: 14 तथा 18 वर्ष तक के समूह में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए व्यक्तिगत चैम्पियनशिप जीती।

जने पत्तन की महिला कर्मचारियों की टीम की श्रीमती भारती ठाकुर, श्रीमती सुषमा म्हात्रे, श्रीमती स्मिता शेट्टे तथा सुश्री उज्वला निकालजे ने भी पदक जीते।

जने पत्तन टीम की इस बेहतरीन सफलता में टीम के प्रशिक्षक श्री सुनील घरत तथा टीम के प्रबंधक श्री अनिल चिर्लेकर और श्री गुरुनाथ तांडेल का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में पत्तन के अध्यक्ष, श्री एन.एन.कुमार, भा.रा.से. ने टीम के सभी सदस्यों का अभिनंदन किया।

अभिव्यक्ति परिवार की ओर से जनेप टीम का हार्दिक अभिनंदन।

जने पत्तन में अंतरराष्ट्रीय स्तर का समुद्री प्रशिक्षण केंद्र

माननीय पोत-परिवहन मंत्री, श्री नितिन गडकरी ने हाल ही में बेल्जियम का दौरा किया था। इस दौरे पर उन्होंने एन्टवर्प पत्तन प्राधिकरण के तत्वावधान में चल रहे एपीईसी एन्टवर्प /फ्लेडर्स प्रशिक्षण केंद्र का भी दौरा किया था। एपीईसी एन्टवर्प / फ्लेडर्स प्रशिक्षण केंद्र को समुद्री पत्तनों से संबंधित विश्व का सर्वोत्तम प्रशिक्षण केंद्र माना जाता है। इस दौरान माननीय मंत्री महोदय ने भारत में भी एक विश्वस्तरीय पत्तन प्रशिक्षण केंद्र की आवश्यकता को महसूस किया तथा भारत आने पर उन्होंने इस संबंध में अपनी कल्पना को साकार रूप देने के लिए जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास को निर्देश दिया। इसी क्रम में जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास परिसर में एन्टवर्प पत्तन के सहयोग से अंतरराष्ट्रीय स्तर के 'जेएनपीटी-एपीईसी पत्तन प्रशिक्षण केंद्र' की स्थापना करने का निर्णय लिया गया। जवाहरलाल नेहरू पत्तन तथा एपीईसी एन्टवर्प /फ्लेडर्स प्रशिक्षण केंद्र के बीच दि.12 फरवरी, 2015 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौता ज्ञापन पर ज.ने.पत्तन के अध्यक्ष श्री एन.एन.कुमार, भा.रा.से. तथा एन्टवर्प पत्तन के अध्यक्ष श्री मार्क वैन पील ने हस्ताक्षर किए। इस प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना का उद्देश्य भारत तथा पड़ोसी देशों के पत्तनों के अधिकारियों को समुद्री पत्तनों के विकास संबंधी विश्वस्तरीय प्रशिक्षण का अवसर प्रदान करना है।

एपीईसी / फ्लेडर्स प्रशिक्षण केंद्र पत्तन प्रचालन तथा प्रबंधन के सभी पहलुओं जैसे पत्तन प्रबंधन, अभियांत्रिकी, बुनियादी संरचनात्मक विकास, संचार व्यवस्था, सुरक्षा तथा आपदा प्रबंधन, आधुनिक तकनीक के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट प्रशिक्षण प्रदान करने वाला एक विश्वविख्यात केंद्र है। जवाहरलाल नेहरू पत्तन तथा एपीईसी एन्टवर्प /फ्लेडर्स प्रशिक्षण केंद्र के बीच हुए समझौता ज्ञापन से एपीईसी अपना अनुभव तथा अपनी विशेषज्ञता को भारत के साथ साझा करेगा।

जेएनपीटी-एपीईसी प्रशिक्षण केंद्र का पहला सेमिनार दि.23/02/2015 से 28/02/2015 के बीच 'पत्तन प्रबंधन' पर आयोजित किया गया। पहले सेमिनार का उद्घाटन पत्तन के अध्यक्ष, श्री एन.एन.कुमार, भा.रा.से. ने किया। इस अवसर पर पत्तन के उपाध्यक्ष, श्री नीरज बंसल, श्री. क्रिस्टॉफ वाटरशूट, संकाय सदस्य, जनेप पत्तन न्यासी मंडल के सभी न्यासीगण, पत्तन के वरिष्ठ अधिकारी तथा उक्त प्रशिक्षण केंद्र की सलाहकार सुश्री तहिलियानी भी मौजूद थीं। इस छः दिवसीय आवासीय सेमिनार में भारत के सभी महापत्तनों के साथ कुछ निजी पत्तनों के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी भाग लिया। सभी अधिकारियों ने इस सेमिनार की सराहना करते हुए इसे काफी लाभप्रद बताया। इस सेमिनार में एपीईसी एन्टवर्प /फ्लेडर्स प्रशिक्षण केंद्र के श्री निको बर्क्स तथा श्री क्रिस्टॉफ वाटरशूट संकाय सदस्य थे। ■

जनेप में ईआरपी का कार्यान्वयन

श्री रोहित त्रिपाठी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास भारत के वैश्विक व्यापार का एक प्रमुख द्वार है। भारत में कंटेनरों द्वारा आयात निर्यात का यह सबसे बड़ा केंद्र है और देश के महापत्तनों द्वारा होने वाले कंटेनरों के व्यापार का लगभग 57% व्यापार यहीं से होता है। विश्व व्यापार में बढ़ती तकनीक और कम्प्यूटरीकरण के कारण यह आवश्यक है कि जने पत्तन भी उससे कदम से कदम मिलाकर चले।

इसी क्रम में जनेप न्यास में ईआरपी (एंटरप्राइज़ रिसोर्स प्लानिंग) का कार्यान्वयन करके कम्प्यूटर प्रणाली और डाटाबेस प्रबंधन का उन्नयन किया जा रहा है।

ईआरपी वस्तुत: एक व्यवसाय प्रक्रिया प्रबंधन का सॉफ्टवेयर है जिसकी सहायता से कोई संगठन तकनीक, सेवा और मानव संसाधन से संबंधित अपने कार्यों को स्वचालित बना सकता है तथा अपने व्यापार का और बेहतर ढंग से प्रबंधन कर सकता है। ईआरपी के द्वारा प्रचालन, नियोजन, विकास आदि सभी पक्षों का एकीकरण किया जा सकता है। संगठन के प्रमुख कारोबार का स्वचालन और एकीकरण होने से उसे अपनी कार्य प्रणाली को सरल तथा प्रभावी बनाने में मदद मिलती है।

ईआरपी के माध्यम से -

- व्यापार प्रक्रियाओं को परिभाषित किया जा सकता है और उनका अनुपालन सुनिश्चित किया जा सकता है।
- व्यापार संबंधी संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण आँकड़ों की बेहतर सुरक्षा तथा उपयोग किया जा सकता है।
- वर्तमान कार्यों और भविष्य के प्रक्षेपणों के आधार पर कार्य का बेहतर नियोजन किया जा सकता है।
- ग्राहकों/उपभोक्ताओं को बेहतर सेवा देने में मदद मिलती है।
- निर्णय लेने की प्रक्रिया सुगम और तथ्य आधारित बन जाती है।

ईआरपी का कार्यान्वयन

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में सॉफ्टवेअर के विकास, पत्तन प्रचालनों के एकीकरण और उन्नयन का कार्य 15 फरवरी, 2014 को मेसर्स सीएमसी लिमिटेड को रु. 29.65 करोड़ की लागत पर प्रदान किया गया। मेसर्स सीएमसी लिमिटेड ने 13 मार्च, 2014 को अपना कार्य आरंभ किया।

मेसर्स सीएमसी लिमिटेड पत्तन में सैप डाटा प्रोसेसिंग (जो कि एक प्रमुख उद्यम संसाधन नियोजन प्रणाली है) का कार्यान्वयन कर रहे हैं। पत्तन में ईआरपी-सैप के कार्यान्वयन का कार्य मेसर्स केपजैमिनी की निगरानी में किया जा रहा है। सॉफ्टवेयर और सॉफ्टवेयर संबंधी सेवाओं के एंटरप्राइज़ एप्लीकेशन उपलब्ध कराने में सैप विश्व में अग्रणी है।

मेसर्स सीएमसी लिमिटेड जनेप न्यास में आवश्यक सर्वर, स्टोरेज और नेटवर्क के साथ सैप का कार्यान्वयन कर रहे हैं। साथ ही, वे एक अत्याधुनिक डाटा सेंटर भी बनाएंगे। जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास ने इस परियोजना के नियमित अनुवीक्षण के लिए वरिष्ठ प्रबंधक स्तर पर एक विषय निर्वाचन समिति बनाई थी और साथ ही एक कोर टीम का भी गठन किया था जिसने सभी विभागों/अनुभागों के प्रोसेस चैम्पियंस की सहायता से आईटी संसाधनों को इष्टतम बनाने के उद्देश्य से वर्तमान प्रक्रियाओं को बिजनेज प्रोसेस रि-इंजीनिअरिंग के साथ मैप किया।

पत्तन में कार्यान्वित सैप सोल्यूशन के मॉड्यूल इस प्रकार हैं :

- **वित्तीय एवं प्रबंधन लेखाकरण -** यह एक प्रमुख मॉड्यूल है जिसमें पत्तन के विभिन्न प्रभारों, देयों, शुल्क से होने वाली सभी प्राप्तियों, देयताओं और निवेशों आदि का लेखाकरण शामिल है। इसमें बजट बनाना, तुलन पत्र, आंतरिक लेखा परीक्षा आदि भी शामिल हैं।
- **भू-संपत्ति प्रबंधन -** यह मॉड्यूल जनेप की विस्तृत भूमि और उस पर विभिन्न परियोजनाओं के प्रबंधन के लिए है।

- **प्रापण वस्तुसूची एवं गुणवत्ता प्रबंधन -**
  परिसम्पत्तियों, उपस्करों, कलपुर्जों की पहचान, खरीद, जाँच और गुणवत्ता के लिए है।
- **मानव संसाधन/वेतन चिट्ठा/कर्मचारी -**
  पत्तन कर्मचारियों से संबंधित विविध कार्यों, वेतन आदि के लिए आगे चलकर इसमें कर्मचारियों को स्वयं सेवा के लिए यूज़र आईडी और पासवर्ड भी दिए जाने की योजना है जिससे वे अपने व्यक्तिगत आवेदन भी सिस्टम से कर सकेंगे।
- **उद्यम शिक्षा -**
  संगठन के विभिन्न विषयों पर ई-लर्निंग जिससे कर्मचारी स्वयंशिक्षित हो सकें।

को भेजने के लिए किया जाने वाला आंकड़ों के समेकन का कार्य भी समाप्त हो जाएगा। इस प्रकार पत्तन धीरे-धीरे पूरी तरह कागज़-रहित (paperless) हो सकेगा।

सैप के साथ थर्ड पार्टी एप्लीकेशन मॉड्यूल का एकीकरण :

- **पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली**
  इसमें पुस्तकों की खोज़ और उन्हें जारी करना, ई-पुस्तकों का प्रावधान आदि शामिल हैं।
- **आगंतुक प्रबंधन प्रणाली -**
  वर्तमान में आगंतुकों को पास जारी करने की प्रक्रिया पुरानी है और उसे बदलकर बायोमेट्रिक आधार पर जारी प्रवेश कार्ड से प्रतिस्थापित किया जाएगा। साथ ही, सिस्टम सभी द्वारों पर एक सी सूचना देगा ताकि एक द्वार पर देखी जाने वाली सूचना अन्य द्वारों पर भी देखी जा सकेगी।

प्रलेखन और तकनीकी दोनों ही स्तरों पर हिंदी की प्रगति सुनिश्चित करने के लिए पत्तन में ईआरपी-सैप का कार्यान्वयन किया गया है जिसमें अब कर्मचारी न केवल हिंदी में कार्य कर सकेंगे वरन् उस कार्य को सैप पर साझा भी किया जा सकेगा जिससे अन्य कर्मचारी भी उसका उपयोग कर सकेंगे।

- **परियोजना प्रणाली -**
  विभिन्न परियोजनाओं के नियोजन और कार्यान्वयन पर निगरानी के लिए।
- **अनुरक्षण प्रबंधन -**
  उपस्करों के निवारक और सुधारक अनुरक्षण के लिए।
- **सैप रोगी परिचर्या -**
  जनेप अस्पताल में नैदानिक आवश्यकताओं, परीक्षणों, विभिन्न दवाओं, उपकरणों की आवश्यकता (रोगी प्रबंधन प्रणाली) और अपशिष्ट के निपटान आदि के लिए।
- **अभिलेख प्रबंधन प्रणाली -**
  यह भी एक प्रमुख मॉड्यूल है जिसमें विभिन्न दस्तावेजों का भंडारण, सूचीकरण और पुन: प्राप्ति इलेक्ट्रानिक रूप से हो सकेगी। इसमें विभिन्न विभागों की समान प्रकार की सूचना एक ही स्थान पर प्राप्त की जा सकेगी। विभिन्न विभागों/अनुभागों द्वारा रिपोर्टों को तैयार करने और उन्हें मंत्रालयों

वर्तमान नेविस, जलयान यातायात प्रबंधन प्रणाली, पत्तन सामुदायिक प्रणाली के साथ ईआरपी सैप का एकीकरण और अभिलेख प्रबंधन प्रणाली के एक्सेस के लिए कर्मचारियों के अभिलेखों, मंडल कक्ष के अभिलेखों/वित्त विभाग के वाउचरों के डाटा का डिजिटाइज़ेशन किया जा रहा है।

सभी व्यापार प्रक्रिया प्रधान सूचियाँ और व्यापार योजनाएँ भी तैयार की गई हैं। कोर टीम सदस्यों और कुछ एंड यूज़र्स के लिए प्रशिक्षण पूर्व सत्र का आयोजन भी किया गया था। उपभोक्ताओं के लिए उपयोगकर्ता स्वीकृति परीक्षण प्रशिक्षण आरंभ किए जा रहे हैं।

जनेप न्यास में सैप-ईआरपी का कार्यान्वयन होने से पत्तन के कार्य व्यवहार पर और भी सकारात्मक प्रभाव होगा क्योंकि इससे अलग अलग विभागों के विभिन्न कार्यों में एकरूपता आएगी और त्रुटिहीन प्रचालन और प्रहस्तन सुनिश्चित हो सकेगा। ■

कंटेनर राजस्व अनुभाग की कार्य प्रणाली

गणेश गंगाराम मोकल
कार्यालय अधीक्षक (वित्त)

जनेप न्यास के वित्त विभाग में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाला अनुभाग है राजस्व अनुभाग। कंटेनर राजस्व अनुभाग की अप्रैल से सितम्बर, 2014 की तिमाही में कुल आय रु. 374.31 करोड़ थी जबकि वार्षिक कुल आय लगभग रु. 748.62 करोड़ थी। इस अंक में हम कंटेनर राजस्व अनुभाग के एक महत्वपूर्ण कार्य रॉयल्टी जमा करने पर चर्चा करेंगे। जनेप न्यास को निम्नलिखित प्राईवेट ऑपरेटरों से रॉयल्टी मिलती है :

1. मेसर्स गेटवे टर्मिनल्स इंडिया प्रा.लि., जिसका नया नाम मे. एपीएम टर्मिनल्स है।
2. मे. न्हावा शेवा इंटरनेशनल कंटेनर टर्मिनल जिसका नया नाम मे. डी पी वर्ल्ड है।

मे. डी पी वर्ल्ड से जनेप न्यास को प्रहस्तन के लिए रु. 2510 प्रति टीईयू की दर से मासिक रॉयल्टी मिलती है (यह दर हर साल बदलती है, पिछले साल यह दर रु. 2361 प्रति टीईयू थी) उनके ऑडिटर द्वारा प्रमाणित मासिक प्रहस्तित टीईयू के अनुसार रॉयल्टी का भुगतान आरटीजीएस द्वारा किया जाता है। उसमें से टीडीएस की रकम कम करके वे रॉयल्टी का भुगतान करते हैं। उन्हें बीजक भुगतान की रसीद दी जाती है। और टीडीएस की रकम एडवांस टैक्स के खाते में डालकर उन्हें उसकी भी रसीद दी जाती है।

3. मे. स्पीडी मल्टीमोड्स लि. जिसका नया नाम मे. डीबीसी पोर्ट लॉजिस्टिक्स है।

मे. एपीएम टर्मिनल्स से जनेप न्यास को प्रहस्तन के 35.503 प्रतिशत प्रति टीईयू की दर से मासिक रॉयल्टी मिलती है। उनके ऑडिटर द्वारा प्रमाणित मासिक प्रहस्तित टीईयू के अनुसार रॉयल्टी का भुगतान आरटीजीएस द्वारा किया जाता है। उसमें से टी.डी.एस. की रकम काट कर वे रॉयल्टी का भुगतान करते हैं। उन्हें बिल एवं भुगतान की रसीद दी जाती है।

मे. डीबीसी पोर्ट लॉजिस्टिक से जने पत्तन न्यास को प्रहस्तन के लिए रु. 391 प्रति टीईयू की दर से मासिक रॉयल्टी मिलती है। (यह दर हर साल बदलती है, पिछले साल यह दर रु. 386 प्रति टीईयू थी)। उनके ऑडिटर द्वारा प्रमाणित मासिक प्रहस्तित टीईयू के हिसाब से रॉयल्टी का भुगतान आरीटीजीएस द्वारा किया जाता है। उसमें

से टीडीएस की रकम कम करके वे रॉयल्टी का भुगतान करते हैं। उन्हें बीजक एवं भुगतान की रसीद दी जाती है। टीडीएस की रकम एडवांस टैक्स के खाते में डालकर उन्हें उसकी भी रसीद दी जाती है।

जने पत्तन न्यास को निम्नलिखित प्राइवेट ऑपरेटरों से भी रॉयल्टी मिलती है। माह जनवरी, 2014 को प्राप्त मासिक रॉयल्टी और उसके अनुसार परिकलित वार्षिक रॉयल्टी निम्नानुसार है :

	टीईयू	लेखा कूट	दर/टीईयू	मासिक रॉयल्टी	वार्षिक रॉयल्टी (लगभग)
जनवरी, 2014		मे. एपीएम टर्मिनल्स	35.503	21.68 करोड़	260.24 करोड़
		मे. डी पी. वर्ल्ड	2510	12.55 करोड़	150.60 करोड़
		मे. डीबीसी पोर्ट लॉजिस्टिक्स	391	0.34 करोड़	4.02 करोड़
			कुल	**34.43 करोड़**	**414.86 करोड़**

इस प्रकार राजस्व अनुभाग लगभग रु. 748.62 करोड़ की कुल वार्षिक आय और (रु. 414.86 करोड़) वार्षिक रॉयल्टी मिलाकर रु. 1163.48 करोड़ का राजस्व, प्राईवेट ऑपरेटरों से जमा करता है।

- विष्णु वर्मा
ककोली-224195
जि. फैजाबाद
(उत्तर प्रदेश)

ठोकर

पग-पग पर ठोकर खाए हैं।
हम तो कुछ ना कर पाए हैं।।

जीवन भर अँधियारा देखा,
सिर्फ टूटता तारा देखा।
नहीं फूल ना देखी कलियाँ,
ना सपना प्यारा-सा देखा।
सिर्फ वेदना रही साथ में,
सहते हुए चले आए हैं।
हम तो .. ..।।

मेरा तो अनुमान यही है,
मेहनत करना राह सही है।
लेकिन ऐसा ना होता है,
इसका मुझको ज्ञान नहीं है।
टेढ़े-मेढ़े जीवन पथ पर,
चलते-चलते घबराए हैं।
हम तो ....।।

दुनिया को हम समझ न पाए,
सोच-सोच करके पछताए।
आगे बढ़ते देखा सबको,
फिर भी आगे बढ़ ना पाए।
आज समय जब बीत रहा तो,
खड़े हुए हैं मुँह लटकाए।
हम तो .. ..।।

डॉ. प्रशांत केलकर
जनेप अस्पताल
उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी

प्रतिरक्षी तंत्र हमारा सुरक्षा कवच

हमारे चारों तरफ बड़ी संख्या में कीटाणु-विषाणु और अन्य सूक्ष्म जीवाणु मंडराते रहते हैं, जो शरीर में प्रवेश कर हमें बीमार कर सकते हैं। शरीर का प्रतिरक्षी तंत्र (immune system) हमें इन बीमारियों से बचाता है।

प्रतिरक्षी तंत्र के दो भाग हैं - पहला भाग हमारे भीतर जन्मजात रूप से होता है। यह हमारा पहला सुरक्षा कवच है। त्वचा, नाक/मुख की झिल्ली, पेट का अम्लीय आमाशय रस, लार इस भाग के उदाहरण हैं। यह भाग सूक्ष्म जंतुओं को शरीर में प्रवेश करने से रोकता है।

अगर किसी वजह से ये जंतु इस रक्षा कवच को भेद कर शरीर के भीतर प्रवेश करने में सफल हो भी जाएँ, तो दूसरा रक्षा कवच सक्रिय हो जाता है जिसमें रक्त कोशिकाएं और विभिन्न रसायन शामिल हैं। रक्त में अनेक प्रकार की श्वेत कोशिकाएं होती हैं जो कि प्रतिरक्षा का कार्य करती हैं, जैसे कि न्यूट्रोफिल, लिंफोसाइट, इओसिनोफिल, मोनोसाइट एवं बेसोफिल।

न्यूट्रोफिल, इओसिनोफिल और मोनोसाइट कीटाणुओं को निगलकर उन्हें विशेष रसायन द्वारा नष्ट करती हैं। लिंफोसाइट के दो प्रकार हैं - बी-लिंफोसाइट और टी-लिंफोसाइट। बी-लिंफोसाइट विषाणुओं एवं अन्य सूक्ष्म जंतुओं के विरुद्ध प्रतिरक्षी बनाकर उन्हें नष्ट करती हैं। इन कोशिकाओं की यह विशेषता है कि ये सूक्ष्म जंतुओं के लाखों प्रकारों को याद रखकर उन्हें पहचान लेती हैं।

टी-लिंफोसाइट तुरंत सूक्ष्म जंतुओं पर आक्रमण करके उन्हें रसायनों द्वारा नष्ट करते हैं।

लसिका प्रणाली भी शरीर के रक्षा कवच का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। शरीर में करीब 600 लसिका ग्रंथियाँ होती हैं, जो कि ज्यादातर कच्छ, बगल और गर्दन में होती हैं। आम तौर पर छोटी सी गांठ जैसी प्रतीत होने वाली ये ग्रंथियाँ, संक्रमण के समय काफी बड़ी हो जाती हैं। लसा ग्रंथी छलनी का कार्य करती है। लसिका में बहने वाले सूक्ष्म जंतुओं को यहाँ अटकाया जाता है और फिर लिंफोसाइट के जरिए उन्हें नष्ट किया जाता है।

शरीर में दो और ऐसे अवयव हैं जो प्रतिरक्षी तंत्र के हिस्से हैं - थाइमस और प्लीहा (स्प्लीन)। थाइमस श्वासनली के सामने स्थित एक अवयव है जो श्वेत कोशिकाओं को अपनी और पराई कोशिकाएँ पहचानना सिखाता है, ताकि शरीर की कोशिकाओं को जंतु समझकर गलती से उन्हें नष्ट न किया जाए। प्लीहा पेट के ऊपरी बाईं ओर स्थित एक अवयव है जो लसिका ग्रंथियों की भांति सूक्ष्म जंतुओं को अपने भीतर कैद कर लेती है।

प्रतिरक्षी तंत्र से जुड़ी बीमारियाँ

1) प्रतिरक्षी तंत्र की निष्क्रियता

प्रतिरक्षी तंत्र कम सक्रिय होने की वजह से व्यक्ति को जल्दी से संक्रमण हो जाते हैं। इसके मुख्य कारण हैं -

क) जन्मजात प्रतिरक्षी निष्क्रियता जो
x linked agammaglobinemia, x linked SCID, complement deficiency आदि बीमारियों में देखी जाती है।

ख) एच.आई.वी./एड्स जैसी बीमारियों के कारण प्रतिरक्षी क्षमता कमजोर हो जाती है। एड्स बीमारी एच.आई.वी. नामक विषाणु के संक्रमण से होती है। यह विषाणु सी. डी. 4 टी-लिंफोसाइट को नष्ट करते हैं, जो हमें सूक्ष्म जंतुओं से बचाने का कार्य करते हैं। प्रतिशक्ति कम होने के कारण एड्स के रोगियों को टी.बी. जैसी संक्रामक बीमारियाँ जल्दी हो जाती हैं।

ग) अंग प्रतिरोपण या कैंसर में उपयोग होने वाली दवाइयों के कारण भी प्रतिरक्षी तंत्र दुर्बल हो जाता है।

2) प्रतिरक्षी तंत्र की अति सक्रियता

प्रतिरक्षी तंत्र के जरूरत से ज्यादा सक्रिय होने के कारण भी कुछ बीमारियाँ पैदा होती हैं -

क) एलर्जी संबंधी बीमारियाँ - जैसे दमा, पित्ती, एक्जिमा, खाद्य पदार्थों की एलर्जी, एलर्जिक जुकाम आदि। हालांकि ज्यादातर एलर्जियाँ सामान्य रूप लेती हैं, लेकिन कुछ एलर्जियाँ जान लेवा भी हो सकती हैं।

ख) स्वप्रतिरक्षित बीमारियाँ - कभी कभी प्रतिरक्षी तंत्र शरीर की कोशिकाओं को जंतु समझकर उन्हें मार डालता है जिससे उस अवयव का कार्य प्रभावित होता है। इसके उदाहरण हैं - ऑटोइम्यून थाइरॉइडायटिस, टाइप-1 मधुमेह आदि।

3) कैंसर

कुछ कैंसर प्रतिरक्षी तंत्र से संबंधित होते हैं, जैसे लिंफोमा, मायलोमा और ल्यूकेमिया (रक्त कैंसर)। ऐसे कैंसर में प्रतिरक्षी तंत्र के अक्षम स्वरूप की बहुत अधिक मात्रा की कोशिकाएँ बनती हैं।

प्रतिरक्षिता की जाँच

रक्त की कुछ जाँच करने से प्रतिरक्षी तंत्र की कार्यक्षमता से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी मिल सकती है।

श्वेत कोशिकाओं की गणना

प्रतिरक्षी (anti bodies) की जांच, जिससे किसी संक्रमण के होने या न होने की पुष्टि भी हो सकती है

एलर्जी और कैंसर से जुड़ी जाँच

स्वप्रतिरक्षित बीमारियों के निदान के लिए कुछ एन्टीबॉडी टेस्ट किए जाते हैं, जैसे थाइरॉइड, एन्टीबॉडी टेस्ट आदि।

प्रतिरक्षी तंत्र को विकसित करने के कुछ सरल उपाय

1) पर्याप्त मात्रा में सोना और जीवन में तनाव कम करना - नींद की कमी और तनाव से शरीर में कॉर्टीसोल की मात्रा बढ़ जाती है जिसका प्रतिरक्षी तंत्र पर बुरा असर होता है।

2) तंबाकू एवं मदिरा सेवन न करना - तंबाकू और मदिरा सेवन से प्रतिरक्षी तंत्र कमजोर हो जाता है।

3) उचित मात्रा में ताजी सब्जियां, फल, बादाम, बीज आदि का सेवन करना - इन खाद्य पदार्थों में पाए जाने वाले पोषक तत्व प्रतिरक्षी तंत्र को सुदृढ़ करते हैं।

4) प्रोबायोटिक्स - चीज़, दही जैसे पदार्थों में प्रोबायोटिक्स नामक तत्व होते हैं जो श्वास संबंधी और जठरांत्रीय संक्रमण कम करने में मदद करते हैं।

5) धूप- हर रोज कुछ देर तक ताजी धूप में टहलने से शरीर में विटामिन डी बनता है जिसके कारण कई संक्रमण टल जाते हैं।

6) नियमित रूप से व्यायाम करने और शरीर का वजन नियंत्रित रखने से प्रतिरक्षी तंत्र अधिक सक्रिय रहता है।

7) जड़ी बूटियों के सेवन में सावधानी - बाजार में अनेक ऐसे पदार्थ और दवाइयाँ बेची जाती हैं जिनका कथित रूप से प्रतिरक्षी तंत्र पर अनुकूल प्रभाव है। ऐसे कई दावे बिना किसी ठोस अनुसंधान के किए जाते हैं। अतएव ऐसी कोई भी दवाई या किसी भी ऐसे पदार्थ का सेवन करने से पहले अपने डॉक्टर की सलाह लें।

अनुसंधानों के प्राथमिक परिणामों में यह पाया गया है कि ग्वारपाठा (एलोवेरा) एस्ट्रागॅलस, इकिनेशिया, लहसुन, जिनसेंग, लिकोरिस जैसे पदार्थों में प्रतिरक्षी तंत्र की सक्रियता बढ़ाने के गुण हैं।

आशा है कि भविष्य में इन पदार्थों से बनी ऐसी दवाइयाँ बनेंगी जो कि प्रतिरक्षी तंत्र को विकसित करें।

उस समय तक जरूरी है कि हम स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर अपने प्रतिरक्षी तंत्र रूपी रक्षा कवच को सक्रिय बनाए रखें। ■

दीदी जब अस्पताल से लौटी तो परेशान लग रही थी। जब मैंने पूछा क्या हुआ दीदी तो वे बोलीं अरे ऐसा क्या खाती हूँ ? खून की जाँच की रिपोर्ट में कोलेस्टेराल बढ़ गया है। सोच नहीं पा रही हूँ कि क्या खाऊँ और क्या नहीं।

दूरदर्शन पर विज्ञापन आया कि कितनी सारी माँओं को कोलेस्टेराल बढ़ने की बीमारी है। पर ऐसा नहीं कि सिर्फ माँ को खतरा है। बढ़ती उम्र के सभी व्यक्तियों को इसका खतरा है साथ में ज्यादा वजन के बच्चों में भी यह परेशानी होती है।

हमारे अस्पताल में कर्मचारी तथा उनके परिवारजनों को कोलेस्टेराल शब्द तो पता है लेकिन वे पूछते हैं कि कोलेस्टेराल बढ़ गया इसका मतलब क्या है ?

पहले के जमाने में यह तकलीफ बहुत कम लोगों को होती थी। आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी, भोजन के वक्त में हर दिन बदलाव, तनाव भरी जिंदगी, नींद की कमी, खाने में तैलीय पदार्थों की अधिकता, पानी की कमी, शराब, अलग-अलग

दवाइयाँ, ऐसे कितने ही कारण हैं जिनसे हमारे शरीर में असंतुलन होता है जो कोलेस्टेराल बढ़ने को दावत देता है।

कोलेस्टेराल एक चिकना पदार्थ होता है, जो कि शरीर के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह शरीर में अनेक रूप में काम आता है। यह शरीर को अनेक तरलों से मिलता है। 3/4 कोलेस्टेराल लिवर में बनता है और 1/4 कोलेस्टेराल खाने से मिलता है।

शरीर में सामान्य रूप में कोलेस्टेराल पाया जाता है। शरीर अत्यधिक कोलेस्टेराल को चाहे तो मलविसर्जन से निकाल देता है या चर्बी के रूप में जमा कर लेता है। अत्यधिक कोलेस्टेराल और संबंधित विभिन्न प्रकार के चिकने पदार्थ शरीर के लिए नुकसान दायक होते हैं। इसे हाइपर कोलेस्टेरालमिया कहते हैं। इससे अनेक बीमारियाँ हो सकती हैं, जैसे दिल का दौरा, सदमा।

श्रीमती ज्योति गजानन म्हात्रे
स्टाफ नर्स

उपयोग : यह शरीर में अनेक तरह से उपयोगी है। शरीर की सबसे छोटी इकाई को कोशिका कहते हैं। अरबों कोशिकाओं से मिलकर हमारा शरीर बनता है। हर कोशिका का बाहरी कवच चिकनाई युक्त होता है, जिससे कि उसका अस्तित्व रहता है। इस चिकनाई में 50 प्रतिशत कोलेस्टेराल होता है जो खास कर हर कोशिका में पानी, बिजली एवं अन्य पदार्थ के परिवहन को नियंत्रित करता है। नसों में यह दिमाग और शरीर के विभिन्न अंगों के बीच में सूचना के आदान प्रदान में खास महत्व रखता है।

कोलेस्टेराल अनेक महत्वपूर्ण हारमोंस के निर्माण में आवश्यक होता है। हारमोंस शरीर में स्विच के जैसे काम करते हैं। मतलब कि शरीर की अनेक प्रक्रियाओं को शुरू या बंद करते हैं जैसे कि मासिक धर्म होना।

कोलेस्टेराल अनेक क्रियाशील पदार्थों का निर्माण करता है, जैसे कि स्टेराइड हारमोंस। यह शरीर में अनेक महत्वपूर्ण काम करता है - जैसे रक्तचाप और शर्करा पर नियंत्रण रखना।

एड्रीनल हारमोंस - यह शरीर में नमक -पानी का हिसाब रखता है।

विटामिन डी - जो कि हड्डियों में कैल्शियम जमा करके उन्हें मजबूत करता है।

बाइल एसिड - जो चर्बी के पाचन में काम आता है। कोलेस्टेराल के बिना जीवन संभव नहीं है। लेकिन कोलेस्टेराल जानलेवा भी हो सकता है।

प्रकार

कोलेस्टेराल एक ही प्रकार का होता है। लेकिन कोलेस्टेराल किस प्रकार के लाइपोप्रोटीन के साथ है, उसके अनुसार उसे अच्छा या बुरा कोलेस्टेराल कहा जाता है।

बुरा कोलेस्टेराल :

1) कॉईलोमाईक्रोन
2) बी. एल.डी.एल. लाइपोप्रोटीन
3) एल.डी.एल. लाइपोप्रोटीन

ये तीनों तरह के कोलेस्टेराल शरीर के विभिन्न अंगों में जाकर या तो शरीर के पालन के लिए खर्च कर दिए जाते हैं या फिर जमा हो जाते हैं। अगर अत्यधिक कोलेस्टेराल जमा हो जाता है तो शरीर को खतरा पैदा सकता है।

ये खून की नलियों में जमा होकर उसे संकुचित कर देते हैं या फिर अवरुद्ध कर देते हैं। अंत में यह विभिन्न अंगों में खून के प्रवाह को कम करके नुकसान पहुंचाते हैं। जैसे कि दिल का दौरा या सदमा। इसलिए इस प्रकार के कोलेस्टेराल को बुरा कोलेस्टेराल कहते हैं।

अच्छा कोलेस्टेराल

एच.डी.एल. लाइपोप्रोटीन - ये कोलेस्टेराल शरीर के विभिन्न अंगों से लिपिड को लिवर में ले जाता है। वहाँ पर चाहे तो वे नया लाइपोप्रोटीन बनाने में लगा दिए जाते हैं या बाइल अथवा पित्त द्वारा मल विसर्जन द्वारा निकाले जाते हैं। अंत में एच.डी. एल. लाइपोप्रोटीन शरीर में कोलेस्टेराल को कम करके विभिन्न बीमारियों से बचाता है। इसलिए इस प्रकार के कोलेस्टेराल को अच्छा कोलेस्टेराल कहते हैं।

हायपर कोलेस्टेरालमिया

जब कोलेस्टेराल की मात्रा खून में बढ़ जाती है तब बीमारियों का सामना करना पड़ता है।

1) आनुवंशिक विकृतियाँ - हायपर लाइपोप्रोटीनेमिलया
2) नेफ्रोटिक सिंड्रोम - किडनी की बीमारियाँ
3) मायोक्साइडिया (मिक्सीडीमा)
4) आब्स्ट्रक्टिव जांडिस
5) डायबिटीस
6) गॉलस्टोन
7) अथरोस्केलोरोसिस
8) कार्डिओ वेस्क्युलर, कोरोनरी पेरीफेरल वेस्क्युलर बीमारियाँ

हायपोकोलेस्टेरालमिया

इसमें कोलेस्टेराल की मात्रा कम हो जाती है। 100 एमजी/डीएल से कम कोलेस्टेराल अपनी सेहत के लिए भी बहुत जरूरी है। इसलिए उसकी मात्रा सामान्य रखनी आवश्यक है। कोलेस्टेराल कम होने से बीमारियों का सामना करना पड़ता है:

1) पर्निस्टीयस एनीमिया
2) हिमोलिटिक जांडिस
3) मालआब्स्ट्रक्शन सिंड्रोम
4) एक्यूट मालन्यूट्रीशन
5) एक्यूट इंफेक्शन

शरीर में कोलेस्टेराल की सामान्य मात्रा (लिपिड प्रोफाइल)

कोलेस्टेराल	130 - 250 एमजीडीएल
एचडी एल कोलेस्टेराल	30 - 95 एमजीडीएल
ट्राय ग्लिसराईड लोबल	40 - 80 एमजीडीएल
वी.एल.डी.एल.	38 एमजीडीएल तक
एल.डी.एल.	66 - 178 एमजीडीएल

रोकथाम

1) अगर आपको मोटापा है तो उसे कम करने की कोशिश करें।
2) तेल, चर्बी वाले पदार्थों का सेवन कम करें।
3) नियमित रूप से कोलेस्टेराल की मात्रा की जांच करवाएँ और चिकित्सक से परामर्श लें।
4) व्यायाम करें।
5) तले पदार्थों का सेवन न करें या बहुत कम करें।
6) पानी का सेवन बढ़ाएँ।
7) अगर आपके खून में कोलेस्टेराल की मात्रा अधिक हो तो दवाइयों का नियमित रूप से सेवन करें।
8) दूध, मलाई, घी, पनीर आदि तैलीय पदार्थों का सेवन कम करें।
9) हरी सब्जियाँ और फल खाएँ।
10) शराब से दूर रहें।
11) खाने में जैतून तेल, रैपसीड ऑईल, राइस ब्रान तेल का सेवन करें। तेल कम से कम खाने की कोशिश करें। ■

उच्च रक्तचाप में लापरवाही के दुष्परिणाम

डॉ. मिलिंद भोसकर
चिकित्सा अधिकारी

एक परीक्षण में यह पाया गया है कि पूरे विश्व में लगभग 10% लोग उच्च रक्तचाप से ग्रस्त हैं। उच्च रक्तचाप होते हुए भी लगभग 50% रोगियों को इसकी जानकारी नहीं होती है और जिन लोगों को जानकारी होती भी है, उनमें से भी आधे रोगी इसकी जाँच या चिकित्सा नहीं कराते हैं। और जो लोग चिकित्सा करवाते भी हैं, उनमें से आधे सही ढंग से चिकित्सा या उपचार नहीं करवा पाते। इस कारण उच्च रक्तचाप के बहुत से रोगियों को, उच्च रक्तचाप की जटिलताओं से उत्पन्न रोगों जैसे दिल का दौरा, हृदय का रुक जाना, एंजाइना, गुर्दे की खराबी, ब्रेन हेमरेज, आँख में रेटिना फटने जैसी गंभीर एवं जानलेवा बीमारियों का सामना करना पड़ता है। इन खतरनाक और जानलेवा रोगों के उपचार हेतु जब यह पीड़ित अस्पताल में आते हैं, तब उस जाँच के दौरान डॉक्टर उनको उच्च रक्तचाप होने की जानकारी देते हैं।

आम व्यक्तियों में इस लापरवाही का कारण इस प्रकार समझाया जा सकता है कि लगभग सभी व्यक्तियों में सामान्य स्वस्थ परिस्थियों में सिस्टोलिक (ऊपरी) ब्लड प्रैशर 100 से 140 तक एवं डायस्टॉलिक (निचला) ब्लड प्रैशर 60 से 90 तक हो सकता है। लेकिन जब अनेक कारणों से यह ऊपरी या निचला अथवा दोनों रक्तचाप बढ़ने लगते हैं, उस वक्त अधिकतर रोगी बहुत कम या नहीं के बराबर लक्षण महसूस कर पाते हैं, जिस कारण से वे सब किसी भी प्रकार की चिकित्सा अथवा जाँच से दूर रहते हैं। इसलिए उन्हें उच्च रक्तचाप होने का पता भी नहीं चल पाता है। लेकिन अंदर ही अंदर हृदय, किडनी, मस्तिष्क, एवं आंख के रेटिना पर दुष्परिणाम होते रहते हैं और जब इन अंगों की कार्यक्षमता बहुत बिगड़ चुकी होती है, तब रोगी को परेशानी होने लगती है। लगातार चुपचाप इन महत्वपूर्ण अंदरूनी अंगों को हानि पहुँचाते रहने के बावजूद भी बहुत समय तक रोगी को कोई लक्षण न होने के कारण ही उच्च रक्तचाप के रोग को 'साइलेंट किलर' कहते हैं। सिरदर्द, चक्कर आना, अचानक नाक से खून आना, यह सब उच्च रक्तचाप के प्रारंभिक लक्षण हो सकते हैं। यह लक्षण होने पर हमें अपने रक्तचाप की नियमित जाँच करवाना जरूरी हो जाता है।

उच्च रक्तचाप के शीघ्र निदान और तुरंत, योग्य एवं समुचित नियंत्रण से हृदय, मस्तिष्क, किडनी और रेटिना के जटिल दुष्परिणामों से बचकर रोगी स्वस्थ रहकर सामान्य जीवन व्यतीत कर सकता है। आज की नई और आधुनिक सस्ती दवाइयाँ उपलब्ध हो जाने के साथ ही इन दवाइयों के विपरीत प्रभाव नहीं के बराबर देखने को मिलते हैं। इस सब से उच्च रक्तचाप का उपचार सुरक्षित हो जाता है।

यदि उच्च रक्तचाप के साथ, उससे उत्पन्न कोई जटिलता जैसे एंजाइना, स्ट्रोक/लकवा, मस्तिष्क रक्तस्राव, दिल का दौरा इत्यादि हों, तो उन पर ध्यान देना जरूरी हो जाता है। इसके साथ ही अन्य प्रतिकूल लक्षणों, जैसे-मधुमेह, मोटापा, मानसिक तनाव, सिगरेट या शराब की लत हो तो इनकी भी जानकारी अपने चिकित्सक को देना जरूरी हो जाता है।

दवाइयों के साथ ही उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने हेतु रोगी के लिए अपने आहार (कम नमक) पर ध्यान देना, हफ्ते में तीन से चार दिन क्षमता के अनुसार नियमित व्यायाम और कोशिश कर मानसिक पीड़ा, तनाव से दूर रहना जरूरी है। उच्च रक्तचाप के हर होगी को छह से आठ घंटे अच्छी, गहरी नींद लेने से बहुत लाभ मिल सकता है।

उच्च रक्तचाप के हर रोगी को अपने रक्तचाप की नियमित रूप से जाँच करानी चाहिए और इसके घातक दुष्प्रभावों से अपना बचाव करना चाहिए।

बूंदों की संस्कृति

श्रीमती नेहा परितोष निगम

भारतीय संस्कृति बहुत पुरानी है, और गाहे-बगाहे हम इस पर गर्व भी करते हैं। इस संस्कृति ने हमारे देश को पल्लवित किया है और इसके मूल में हमेशा संजोने, सहेजने और संरक्षण की परंपरा रही है। फिर चाहे वह मानवीय रिश्ता हो या प्राकृतिक। हमने न सिर्फ अपनों की फिक्र की है बल्कि उन रिश्तों में पर्वत, नदियां, पेड़, पक्षी, आकाश, अग्नि, वायु सभी पूरे सम्मान के साथ शामिल रहे हैं। हमारी हर परंपरा, तीज-त्यौहार प्रकृति के ही इर्द-गिर्द घूमते हैं और अहसास कराते हैं कि हम इससे कितने जुड़े हुए हैं।

कहते हैं समय के साथ सब कुछ बदल जाता है, लेकिन कुछ चीजें कभी नहीं बदलतीं जैसे बादलों का आना, खूब गरजना, आंगन में बूंदों का नाचना, गर्मी से बरखा का राहत पहुंचाना, बूंदों का दौड़ते हुए नदियों में मिल जाना और नदियों का सागर में मिल कर ही विश्राम करना आज भी अनवरत जारी है। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि सब कुछ पुराने जैसा ही हो। हमारे पुराने मिट्टी के घर अब पक्के हो गये हैं, जो आंगन कच्चे हुआ करते थे वे अब कंक्रीट के हो चुके हैं। पेड़ कटते और जंगल सिमटते गये हैं। गांव कस्बों में, कस्बा शहरों में बदल चुका है और शहरों के अंदर हर रोज़ कंक्रीट का एक नया शहर खड़ा हो रहा है। इसी के साथ एक नई भोगवादी संस्कृति भी आकार ले रही है और जिस पौराणिक संस्कृति ने हमें जीवों, पेड़ों, नदियों और यहाँ तक कि बूंदों का भी संरक्षण करना सिखाया था वह केवल पढ़ने-पढ़ाने तक ही सीमित हो कर रह गई है।

शहर में रहने वाले ज्यादातर लोग खुद को ज्यादा सभ्य और विकसित मानते हैं। लेकिन यह कैसी शिक्षा और सभ्यता है जो खुद की ही चिंता करती है? गांव-देहात के कम पढ़े-लिखे लोग आज भी मिल कर गांव के हित में पेड़ लगाते हैं, तालाबों का निर्माण करते हैं, उनका संरक्षण करते हैं और वे नदियों को केवल पूजते ही नहीं बल्कि उनका खयाल भी रखते हैं। वे बखूबी जानते हैं कि जिन बूंदों को बादल इस धरा पर बरसाते हैं, वे इतनी अनमोल हैं कि अगर हमने समय रहते इनका संरक्षण नहीं किया तो मानव जाति का विनाश निश्चित है।

एक शोध के मुताबिक हर वर्ष बारिश का लगभग 31 प्रतिशत पानी धरती में वापस पहुंच जाना ही चाहिए ताकि ऐसी नदियां जो हिमालय से नहीं निकलतीं उनमें और अन्य जल स्त्रोतों में पानी का स्तर बना रहे। लेकिन वास्तविकता यह है कि कुल वर्षा का लगभग 13 प्रतिशत पानी ही धरती के भीतर जा पाता है जो कि मानक से 18 प्रतिशत कम है।यही कारण है कि भू-जल के स्त्रोत सूख रहे हैं, पानी का स्तर हर वर्ष नीचे जा रहा है।

विकास के इस दौर में हमारे हर उपकरण और परिष्कृत होते गये हैं लेकिन सिर्फ प्रकृति के दोहन के लिए। पहले हम भू-जल के लिए कुओं का उपयोग करते थे फिर कुछ समय बाद जब पानी का स्तर नीचे चला गया तो हमने टुल्लू-पम्प का इस्तेमाल करना शुरू किया, फिर पानी का स्तर और नीचे चला गया हमने बोरवेल का इस्तेमाल किया, फिर पानी और भी ज्यादा नीचे चला गया तो हम समर्सेबल पम्प का इस्तेमाल करने लगे। कुल मिला कर हम तब-तक ये काम नये नये उपकरणों से करते रहेंगे जब तक पृथ्वी पानी से खाली न हो जाये। लेकिन हमने ऐसी कोई नई तकनीक नहीं ढूंढ़ी जो पृथ्वी के गिरते जल स्तर को रोक सके।

धरती पर बारिश के शक्ल में जो अमृत बरसता है उसे समेटने के लिए सुन्दर फर्श नहीं बल्कि जंगल चाहिए वे भी ऐसे जंगल जिनके पेड़ों के पत्ते चौड़े और खुरदुरे हों ताकि वे बारिश का ज्यादा से ज्यादा पानी अपने पत्तों से होते हुए धरती को वापस लौटा सकें, जंगलों में तो पेड़-पौधों के जरिए यह पानी धरती के भीतर पहुंच जाता है पर शहरों में बारिश का पानी छोटे-छोटे नालों से होते हुए नदियों तक पहुंचता है। इस प्रक्रिया में भी थोड़ा पानी धरती अपने में सोख लेती है और बाकी बचा अतिरिक्त पानी ही नदी-नालों में बहता है पर अब सीमेंट के बढ़ते प्रयोग के कारण बारिश का ज्यादातर पानी नालियों से नालों और फिर नदियों में बह जाता है। नदियों का अपना विशाल प्रवाह क्षेत्र अतिक्रमण के चलते सिमटता जा रहा है, जिसकी वजह से थोड़ी बारिश में ही ये नदियां उफनने लगती हैं और न जाने कितने ही इलाकों में बाढ़ की शक्ल में कहर बरपाती हैं।

हर तरफ कहीं बाढ़ है, तो कहीं सूखा, कहीं भूस्खलन है, तो कहीं कोई और प्राकृतिक आपदा। ये सारी घटनाएं इस

बात का इशारा करती हैं कि मानव ने विकास के नाम पर प्रकृति को बहुत नुकसान पहुंचाया है। और अगर वास्तव में हम अपनी गलतियों को सुधारना चाहते हैं तो प्रकृति के साथ कदम से कदम मिलाना होगा जैसे हम पहले, बहुत पहले किया करते थे। जब ये बूंदें धरती पर गिरती हैं तो आपने देखा होगा ये ढलानों से होते हुए कुछ निचले स्थानों में एकत्र हो जाती हैं, ये वही स्थान हैं जहां हम इनको बांध सकते हैं या कहें संरक्षित कर सकते हैं। यानि जिस स्थान पर पानी प्राकृतिक तौर पर इकट्ठा होता है ऐसे स्थानों पर ही छोटे-छोटे तालाबों का निर्माण कर हम इन बूंदों को वापस इस धरती को लौटा सकते हैं। और यही छोटे मगर बड़े काम के तालाब धरती के जल स्तर को बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान देते हैं। जिन क्षेत्रों में बारहमासी नदियां नहीं हैं वहां वर्षा का यही रोका हुआ पानी तालाबों, बावड़ियों और झीलों में इकट्ठा कर साल भर उपयोग किया जाता है।

पानी के संरक्षण की अलख जगाने वाले मैगसेसे पुरस्कार विजेता श्री राजेन्द्र सिंह जिन्हें भारत में वाटर मैन के नाम से जाना जाता है उन्होंने राजस्थान के अलवर ज़िले के गोपालपुरा गांव में ग्रामीणों के साथ मिल कर वर्षा के जल को तालाबों और झीलों में संरक्षित किया ताकि वहां की धरती का पेट बारिश के पानी से भर जाये और आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस प्रयास का असर इतना बड़ा हुआ कि गांव और आस-पास के सूखे कुओं में पानी लौट आया वे पानीदार हो गये और इतना ही नहीं गांव के आस-पास की छोटी नदियां जो वर्षों से सूखी पड़ी थीं, फिर से जी उठीं आज उन नदियों में 12 महीने पानी रहता है। राजेन्द्र जी का तो यह भी मानना है कि अगर भारत की केन्द्र और राज्य सरकारें भारत के विशाल वन क्षेत्र के वर्षा-जल को अलग-अलग स्तर पर छोटे-छोटे तालाबों की शक्ल में संरक्षित करें तो गिरते हुए जल स्तर को ऊपर लाने में काफी मदद मिलेगी।

हमने पहले कभी सोचा भी नहीं था कि जिस पानी पर सभी का समान हक है वह हमसे ही छीन कर बोतल में बंद कर हमें ही बेचा जायेगा। भारत की राजधानी दिल्ली यमुना के तट पर बसी है और जिस यमुना पर दिल्लीवासी कभी गर्व करते थे और जिसकी गिनती भारत की बड़ी नदियों में होती है वह आज नाले की शक्ल में तबदील हो चुकी है। पूरे दिल्ली शहर और कल-कारखानों की गंदगी के सैलाब ने यमुना के जल को पीने तो क्या...छूने लायक भी नहीं छोड़ा है। यही हाल कानपुर, इलाहाबाद में गंगा नदी का और पूना की मूला मूथा नदी का है। ये तो सिर्फ चंद नाम हैं ऐसी नदियों की फेहरिस्त बहुत ही लम्बी है। आज दिल्ली के सीमावर्ती इलाकों में गंगा नदी का पानी गंगा वॉटर के नाम से पीने के लिए सप्लाई किया जाता है। यानि यमुना का क्षेत्र गंगा की दया का मोहताज है। यमुना के शहर दिल्ली में गंगा का पानी सप्लाई कर देने से इस समस्या का स्थाई हल कभी नहीं निकलेगा बल्कि इसका हल निकलेगा उचित जल- प्रबंधन से। हम सभी को जल प्रबंधन की अवधारणा को समझना होगा और इसे सहेजना होगा। हमें इन नदियों को बचाना होगा।

आज हर बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा शहर भी पानी की समस्या से जूझ रहा है। हमारी भोगवादी व्यवस्था ने नदियों को नालों में तब्दील कर दिया है। हमारी संस्कृति शुद्ध और अशुद्ध को अलग-अलग रखने की रही है। लेकिन नदियों के साफ जल में आज गंदे नालों और कारखानों की गंदगी घुलती जा रही है। यह गंदा पानी न सिर्फ नदियों को, बल्कि नदियों से होता हुआ हमारे भूजल को भी दूषित कर रहा है। अगर नदियों के प्रदूषण की यही रफ्तार रही तो नदियों का गंदा पानी जानवरों, फल, सब्ज़ियों और खाने के अन्य माध्यमों से होता हुआ प्रदूषण के जनक मानव समाज के विनाश का एक बड़ा कारण होगा। और इसकी शुरुआत हो चुकी है। जहरीला पानी नदियों में घुलकर कैसे जानलेवा बन जाता है इसका तात्कालिक उदाहरण देखने को मिला उत्तर प्रदेश के बागपत ज़िले के एक गांव में जहां पिछले दो वर्षों में करीब 100 से ज्यादा मरीज़ कैंसर की भेंट चढ़ गये हैं। गांव के अधिकतर बच्चे अपंग और मंदबुद्धि पैदा हो रहे हैं। इन सभी बीमारियों का कारण ढूंढ़ा गया तो पता चला कि पूरा गांव पानी का मारा है। वहां के भू-जल में बड़ी मात्रा में ऐसे तत्व मौजूद हैं जो स्वस्थ इंसान को भी बीमार बना रहे हैं।

अब सवाल यह उठता है कि ज़मीन के जल स्त्रोत में यह जहर घुला कैसे? और जवाब मिला गांव से महज़ 200 मीटर दूर बहने वाली हिंडन नदी से। नदी के आसपास की फैक्ट्रियों के दूषित पानी ने हिंडन के जल को ज़हरीला बना दिया है और हिंडन में प्रवाहित गंदे पानी ने भू-जल को भी प्रदूषित कर दिया है। वहां पानी के नाम पर ज़हर ढोने का काम सिर्फ हिंडन ही नहीं करती बल्कि इसके दायरे में कृष्णा और काली जैसी सहायक नदियां भी हैं। इन सभी नदियों का पानी आखिर में ग्रेटर नोएडा के पास यमुना में मिल जाता है और यमुना का हाल तो जगजाहिर है ही। विकास के जिन रास्तों पर हम चल रहे हैं, समय-समय पर प्रकृति ने अपना रौद्र रूप दिखा कर उन पर अपना विरोध दर्ज किया है और इस बात का स्पष्ट संकेत दिया है कि मानव का विकास और संरक्षण प्रकृति के विकास और संरक्षण के साथ ही हो सकता है। हर नदी, हर पहाड़ और हर घाटी का अपना एक

अलग अस्तित्व है, एक अलग मिजाज है एवं एक अलग प्रकृति है। कोई एक फॉरमूला सभी पर लागू नहीं किया जा सकता।

बड़े बांधों ने हमारे विकास की यात्रा को एक नई दिशा दी है लेकिन विकास के इन दावों की हकीकत पर समय-समय पर सवाल भी उठते रहे हैं। फिर चाहे मेधा पाटकर द्वारा नर्मदा नदी पर बने सरदार सरोवर बांध का विरोध हो या फिर प्रो. जी. डी. अग्रवाल द्वारा टिहरी बांध का। टिहरी बांध की वजह से हुए खनन से हिमालय की कई वनस्पतियों को हानि पहुंची है। प्रोफेसर अग्रवाल आईआईटी कानपुर में सिविल और पर्यावरण इंजीनियरिंग विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष रहे हैं। प्रो. जी डी अग्रवाल कहते हैं, 'इस हिमालयी प्रदेश में गंगा का गला घोंटा जा रहा है। टिहरी में बांध बनाकर विनाशकारी गलती की जा चुकी है लेकिन उसके बाद भी सरकार सभी नदियों को बैराज बनाकर बांध रही है' कुछ साल पहले स्वामी निगमानंद ने भी गंगा में अवैध खनन के विरोध में आमरण अनशन करते हुए अपनी जान दे दी थी। हिमालय में अकसर भूकंप आते हैं। बहुत सारे पर्यावरणविदों की यह बड़ी चिन्ता है कि अगर कहीं भूकंप का केंद्र बांध हुआ तो उत्तराखंड से दिल्ली तक कितनी तबाही होगी, इसका अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता।

हर बड़ी नदी जिस पर बांध बनाया जाता है वह ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों से होकर गुज़रती है, जिसके आस-पास बहुत बड़ा वन क्षेत्र होता है और पहाड़ों पर, वनों पर न जाने कितने वन्य प्राणी, जन-जातियां आश्रित हैं। हमें पूरी ईमानदारी के साथ उस क्षेत्र की संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए, हर निर्माण से पहले यह आकलन करना होगा कि निर्माण से मिलने वाला फायदा और उस निर्माण से होने वाले प्राकृतिक नुकसान किस अनुपात में हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि तात्कालिक लाभ के लिए हमें आने वाले समय में कहीं बड़ी कीमत चुकानी पड़े।

नदी वह होती है जो बहती है, कई ऐसी नदियां हैं जो सिर्फ इसलिए मर रहीं हैं क्योंकि उस पर बने बांध/बैराज ने उनके पानी को रोक लिया है, और आगे बढ़ती नदी पानी के अभाव में जगह-जगह रुकी सी नज़र आती है जो अपने साथ कचरे-गंदगी को बहा कर ले जाने में असमर्थ होती है और यही रुका पानी-गंदगी न जाने कितनी बीमरियों को जन्म देते हैं। गंगा नदी के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ है। गंगा पर बना फरक्का बैराज भी इसी वजह से विवादों में रहा है। बिहार के कोसी नदी का तांडव तो बांध बनने के बाद पहले से ज्यादा उग्र हो गया है। इसका यह कदापि अर्थ नहीं कि बांध न बनाये जाएं। लेकिन हां यह ज़रूर है कि प्रकृति से जुड़े निर्माण हमसे और ज्यादा समझदारी और संवेदना की मांग करते हैं। हमें यह भी समझना होगा कि छोटे-छोटे निर्माण भी बड़े परिवर्तन की ताकत रखते हैं, जितना बड़ा निर्माण होगा उतनी ज्यादा पूंजी लगेगी, उतना ही ज्यादा डूब का क्षेत्र बढ़ेगा, जितना छोटा निर्माण होगा उतना ही कम पैसा लगेगा और बिना किसी डुबान के उसका लाभ बहुत से स्तर पर लिया जा सकता है।

आज जरूरत है छोटे लेकिन अनेक स्तरों पर छोटी-छोटी नदियों को बांधने की जिन्हें चैक डैम, एनीकट के

नाम से जाना जाता है ताकि बारिश में उफनती नदियों को बहुत सारे स्तर पर अलग-अलग जगह पर न सिर्फ रोका जाए बल्कि इस रोके गए पानी को कृषि, जन-उपयोग, मत्स्य-पालन जैसे कामों में लाया जाए और ये रुका पानी उस स्थान का जल स्तर भी बढ़ाता रहेगा। लेकिन हां यह सुनिश्चित करना होगा कि नदियों की अविरलता हर हाल में बनी रहे, नदियां बहती रहें थमें नहीं।

पानी आने का माध्यम सिर्फ एक है, और वह है वर्षा का जल लेकिन इसे सहेजने के तरीके अनेक हो सकते हैं। आइये अपनी पुरानी सहेजने की परंपरा को फिर से जीकर देखें। ताकि आने वाली पीढ़ी के हाथों में हम एक स्वच्छ, सुंदर और प्रदूषण मुक्त धरती सौंप सकें जिसमें जीवन खेले, खिले और खूब आगे बढ़े।

इस सृष्टि का दो तिहाई भाग पानी है, जब जल में विकार उत्पन्न होता है तो धरती को मानो बुखार चढ़ जाता है, मौसम का मिजाज़ बिगड़ने लगता है, कहीं बाढ़ तो कहीं सूखा देखने को मिलता है और जीवन का बचना मुश्किल हो जाता है। हितकर यही है कि हम वर्षा-जल का संरक्षण करें और उसे अनुशासित होकर उपयोग करें और उपयोग के बाद प्रकृति की इस अमूल्य धरोहर को उसे वापस लौटाने का भी प्रबंध करें क्योंकि जल ही जीवन है और जल का संरक्षण ही जीवन का संरक्षण है। ■

मालवीय जी और हिंदी

बहुमुखी प्रतिभा के धनी महामना पंडित मदन मोहन मालवीय का कार्य क्षेत्र बहुत व्यापक था। वर्ष 1861 में प्रयाग में उनका जन्म हुआ था। वे एक महान देश भक्त, स्वतंत्रता सेनानी विधिवेत्ता, संस्कृत वाङमय और अंग्रेजी के विद्वान, शिक्षाविद्, पत्रकार और प्रखर वक्ता थे। उन्होंने 1886 में 25 वर्ष की आयु में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन में भाग लिया और उसे संबोधित किया। वे वर्ष 1909, 1918, 1932 और 1933 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। वर्ष 1931 में उन्होंने दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व भी किया।

स्वतंत्रता आंदोलन में अपना पूर्ण योगदान देने के उद्देश्य से महामना ने 1909 में वकालत छोड़ दी, यद्यपि उस समय वे सुंदर लाल जैसे प्रथम श्रेणी के वकीलों में गिने जाते थे। लेकिन दस साल बाद भी उन्होंने चौरी-चौरा कांड के मृत्युदण्ड के सजायाफ्ता 156 बागी स्वतंत्रता सेनानियों की पैरवी की और उनमें से 150 को बरी करा लिया।

महामना अपने द्वारा किए गये कार्यों का न तो स्वयं प्रचार करते थे और न चाहते थे कि उनके द्वारा किए गए सद्कार्यों का कोई दूसरा भी प्रचार करे। वे सही मायने में एक कर्मयोगी थे। मालवीय जी अपने द्वारा शुरू किये कार्य को किसी योग्य व्यक्ति को सौंपकर दूसरे नए कार्य में जुट जाते थे। उनके नाम का कहीं उल्लेख न हो इस बात पर वह इतना ध्यान देते थे कि अपने घर के बाहर भी उन्होंने अपना नाम कभी नहीं लिखवाया।

19वीं शताब्दी में नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना का स्फुरण हो रहा था। एक तरफ युवकों में राष्ट्रीय चेतना अंकुरित हो रही थी तो दूसरी तरफ मैकाले के जोर देने पर कम्पनी सरकार ने 1835 में अंग्रेजी शिक्षा प्रचार का प्रस्ताव पास कर दिया, एतदर्थ देश में यत्र-तत्र अंग्रेजी के स्कूल खोले जाने लगे। अब प्रश्न उठा अदालती भाषा का और स्कूलों में हिंदी के एक अनिवार्य विषय के रूप में रखने का। इन दोनों बातों में हिंदी का घोर विरोध हुआ। इस विरोध की कहानी भी बहुत रोचक है। मुगलकाल में अदालतों की भाषा फारसी चली आ रही थी। अंग्रेजी-शासन काल में भी प्रारंभ में यही परम्परा चलती रही किंतु सर्वसाधारण जनता की फारसी-भाषा और उसकी लिपि संबंधी कठिनाइयों को देखकर वर्ष 1836 में कम्पनी सरकार ने आज्ञा जारी की कि सारा अदालती काम देश की प्रचलित भाषाओं में किया जाना चाहिए। इसके परिणामस्वरूप संयुक्त प्रांत में हिंदी खड़ी बोली को वहां की अदालती भाषा स्वीकार कर लिया गया। सारा अदालती कार्य हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि में होने लगा। कम्पनी सरकार भाषा संबंधी इस नीति पर चिरकाल तक न टिक सकी। केवल एक साल के पश्चात उत्तरी भारत के सब दफ्तरों की भाषा उर्दू कर दी गई। यह सब मुसलमानों के विरोध के कारण हुआ। इस प्रकार मान-मर्यादा और आजीविका की दृष्टि से सबके लिये उर्दू सीखना आवश्यक हो गया और देश-भाषा के नाम पर स्कूलों में छात्रों को उर्दू पढ़ाई जाने लगी। इस प्रकार हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के पढ़ने वालों की संख्या दिन-प्रतिदिन कम होने लगी।

उत्तरी भारत में स्वामी दयानंद सरस्वती ने वैदिक धर्म-प्रचार और आर्य समाज की स्थापना कर जनता को अपनी ओर आकर्षित किया। उन्होंने हिंदुस्तान को आर्यवर्त तथा हिंदी को आर्य भाषा का नाम दिया तथा प्रत्येक आर्य के लिए आर्यभाषा का पढ़ना आवश्यक ठहराया। स्वामी दयानंद तथा उनके द्वारा स्थापित 'आर्य समाज' ने हिंदी भाषा के प्रचार में जो महत्वपूर्ण कार्य किया, वह चिरस्मरणीय है।

अब देश में इस प्रकार का वातावरण बन रहा था कि संयुक्त प्रांत (आज के उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड) के बुद्धिजीवियों के लिए यह बर्दाश्त करना असंभव होने लगा था कि सुसंस्कृत तथा समृद्ध भाषा हिंदी के होते हुए भी

पराधीन होने के कारण प्रांत की जनता को समस्त राजकीय कार्य में विदेशी भाषा फारसी अथवा अंग्रेजी का प्रयोग करना पड़े। अंततः 19वीं शताब्दी के मध्य तक आते-आते अनेक स्वाभिमानी देशभक्त बुद्धिजीवियों ने इस बात का बीड़ा उठाया कि प्रदेश में विदेशी भाषा की जगह निज भाषा के प्रयोग को शासकीय अनुमति मिल जाए। इस कड़ी में अत्यंत महत्वपूर्ण प्रयास राजा शिवप्रसाद द्वारा भी वर्ष 1868 में किया गया जो उपर्युक्त विदेशी लिपियों के हिमायतियों के विरोध के कारण सफल न हो सका।

वर्ष 1868 में प्रयाग में हिंदी उद्धारिणी - प्रतिनिधि मध्यसभा की स्थापना हुई। मालवीय जी ने इसमें जी खोलकर काम किया, व्याख्यान दिए, लेख लिखे और अपने मित्रों को भी उस काम में भाग लेने की लिए उत्प्रेरित किया। उन्होंने नए सिरे से अदालतों में नागरी के प्रवेश का प्रयत्न किया। मालवीय जी ने इस बात पर गंभीरता से विचार किया कि अब तक इस दिशा में क्यों सफलता नहीं मिली। महामना ने व्यवस्थित रूप से इस काम को हाथ में लिया। एक ओर तो उन्होंने देवनागरी लिपि के पक्ष में हस्ताक्षर अभियान की योजना शुरू की, दूसरी ओर बहुत-सी सामग्री एकत्रित कर कोर्ट कैरेक्टर एण्ड प्राइमरी एजूकेशन नाम की पुस्तकें लिखीं। इसमें हिंदी का प्रयोग सरकारी कामकाज में क्यों किया जाए इसकी प्रचुर सामग्री थी।

इसी प्रकार, आधुनिक हिंदी के जन्मदाता भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा काशी में स्थापित नागरी प्रचारिणी सभा भी नागरी लिपि के प्रचार-प्रसार में लगी थी। किंतु उचित मार्गदर्शन प्राप्त न होने के कारण उसकी स्थिति बिगड़ रही थी। मालवीय जी ने नागरी प्रचारिणी सभा की गतिविधियों में आरंभ से ही अत्यधिक रुचि ली तथा नागरी प्रचारिणी सभा को भी हिंदी के प्रचार-प्रसार के कार्य में प्रगतिशील बनाकर उसे एक प्रकार से पुनर्जीवित कर दिया। दिन-रात एक करके अपनी वकालत के सुनहरे दिनों में धुन के साथ मालवीय जी ने गहरी छानबीन के करके नागरी के पक्ष में प्रमाण और आंकड़े इकट्ठे किये। सैकड़ों जगह डेपुटेशन भेजे गए और हिंदी भाषा और नागरी लिपि की सुंदरता, सहजता और उपयोगिता दिखाई गई। मालवीय जी ने वकालत करते हुए भी अपने मित्र पंडित श्रीकृष्ण जोशी के साथ मिलकर घोर परिश्रम किया। अपने पास से रुपये खर्च करके उपरोक्त कोर्ट लिपि का इतिहास, विगत अधिकारियों की सम्मतियाँ एकत्र करके एक बड़ी सुंदर पुस्तक 'कोर्ट कैरेक्टर एण्ड प्राइमरी एजुकेशन इन नार्थ वेस्टर्न प्रौविन्सेज़' लिखी। यह अभ्यर्थना लेख लेकर 2 मार्च, 1898 को आयोध्या नरेश महाराजा प्रताप नारायण सिंह, मांडा के राजा रामप्रसाद सिंह, आवागढ़ के राजा बलवंत, डॉ. सुंदर लाल आदि के साथ मालवीय जी का एक दल गवर्न्मेंट हाउस प्रयाग में छोटे लाट साहब सर एंटोनी मैक्डॉलेन से मिला। मालवीय जी की मेहनत सफल हो गई। उनकी सब बातें मान ली गईं। अंत में 18 अप्रैल, 1990 को सर मैक्डॉलेन ने एक विज्ञप्ति (गवर्नमेंट गजट) निकाली जिससे अदालतों में तथा शासकी कार्यों में नागरी को भी स्थान मिल गया। लेकिन देश के हिंदी विरोधी लोगों ने इस पर खूब उधम मचाया। इस आदेश के विरोध में जगह-जगह सभाएँ की गईं। प्रस्ताव भेजे गए कि हिंदी को इस प्रकार स्वीकार न किया जाए। पर मालवीय जी भी अपने अभियान में डटे रहे। हिंदी के पक्ष में भी सभाएँ हुईं, प्रस्ताव भेजे गए। अतः लाट साहब तनिक भी विचलित न हुए और अंत में बड़े लाट साहब की अनुमति से यह नियम बन गया कि सभी लोग अपनी अर्जी, शिकायत की दरखास्त, चाहे हिंदी या फारसी में दे सकते हैं। अदालतों, शासकीय कार्यालयों को निर्देश दे दिया गया कि सभी कागजात जैसे सम्मन आदि, जो सरकार की ओर से जनता के लिए निकाले जायेंगे वह दोनो लिपियों यानी नागरी लिपि और फारसी में लिखे अथवा भरे होंगे। सरकार ने इसके साथ ही यह भी ऐलान कर दिया कि आगे किसी भी व्यक्ति को तभी सरकारी नौकरी मिल सकेगी जब वह हिंदी भाषा का भी जानकार हो। जो कर्मचारी हिंदी नहीं जानते थे उन्हें एक साल के भीतर हिंदी सीखने को कहा गया अन्यथा वे नौकरी से अलग कर दिए जायेंगे। इस प्रकार मावलीय जी के अथक प्रयास से हिंदी का प्रवेश संयुक्त प्रांत के शासकीय कार्यालयों में हुआ।

महामना हिंदी के प्रति समर्पित थे। वे चाहते थे कि शिक्षा का माध्यम भी हिंदी हो। वर्ष 1882 में अंग्रेजों ने एक शिक्षा कमीशन बैठाया। इसका मुख्य उद्देश्य था कि यह निर्धारित हो कि शिक्षा का माध्यम क्या हो और शिक्षा कैसे दी जाये ? इस आयोग में साक्ष्य के लिए महामना पंडित मदनमोहन मालवीय तथा भारतेंदु हरिश्चंद्र चुने गए थे। भारतेंदु अस्वस्थ होने के कारण आयोग के सम्मुख उपस्थित नहीं हो पाये। महामना आयोग के सामने उपस्थित हुए थे। उन्होंने अपने बयान में इस बात पर जोर दिया था कि शिक्षा समस्त क्षेत्रों में दी जाये और वह हिंदी भाषा में हो।

महामना वर्ष 1886 से कांग्रेस से जुड़कर देश की राजनीति में आजादी की लड़ाई का हिस्सा बन चुके थे। तभी से उनका सम्पर्क देश के बड़े राजनेताओं से हो गया था। धीरे-धीरे उनको देश के बड़े राजनेता के रूप में जाना जाने लगा। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1909 के अधिवेशन के वह अध्यक्ष चुने गए। देश के व्यापक भ्रमण और गहन जनसम्पर्क से उन्हें यह स्पष्ट दिखने लगा कि अनेक भाषाओं के इस देश भारत के स्वतंत्र होने पर किसी एक भाषा को सम्पर्क भाषा के लिए राष्ट्रभाषा का रूप लेना पड़ेगा। उन्होंने देखा कि देश के अधिकांश भू-भाग में अधिक से अधिक लोग किसी न किसी प्रकार की हिंदी बोलते और समझते थे। जबकि देश की अन्य भाषाएँ यद्यपि उतनी ही महत्वपूर्ण थीं पर उनका दायरा सीमित था। वे इतने विशाल जनसमुदाय के द्वारा बोली और समझी नहीं जाती थी। एक स्वतंत्र राष्ट्र को जोड़ने के लिए एक राष्ट्र भाषा के रूप में मालवीय जी ने हिंदी की महत्ता को परखा। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि देश के अहिंदी भाषी क्षेत्रों में लोगों को हिंदी जानने व समझने का मौका मिलना चाहिए। अत: वर्ष 1910 में महामना के प्रयासों से काशी में 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' की स्थापना हुई। मालवीय जी इसके प्रथम अध्यक्ष बने। धीरे-धीरे पूरे देश में हिंदी साहित्य सम्मेलन की शाखाएँ खोली गईं। इसके माध्यम से देश के अहिंदी भाषी क्षेत्र के लोगों को हिंदी पढ़ने व सीखने का अवसर मिला। अपने स्वभाव के अनुरूप मालवीय जी ने हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना करने के बाद इसे आगे चलाने के लिए बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन को सौंप दिया।

वर्ष 1918 में इंदौर में हुए हिंदी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में महात्मा गांधी इसके अध्यक्ष बने। उनके नेतृत्व में हिंदी के प्रचार का एक नया अध्याय शुरू हुआ। उन्होंने दक्षिण भारत में राष्ट्रभाषा हिंदी-प्रचार का काम प्रारंभ किया। 1935 में दूसरी बार इंदौर में हुए सम्मेलन के अधिवेशन को संबोधित करते हुए महात्मा गांधी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि - 'मेरा क्षेत्र दक्षिण में हिंदी-प्रचार है। वर्ष 1918 में जब आपका अधिवशेन यहां हुआ था तब से दक्षिण में हिंदी प्रचार के कार्य का आरंभ हुआ है।' महात्मा गांधी ने मालवीय जी के हिंदी प्रचार की प्रशंसा करते हुए कहा कि 'सबसे पहला अधिवशेन वर्ष 1910 में हुआ था। उसके सभापति मालवीय जी महाराज ही थे। उनसे बढ़कर हिंदी प्रेमी भारत वर्ष में हमें कहीं नहीं मिलेगा। कैसा अच्छा होता यदि वह आज भी इस पद पर होते। उनका हिंदी प्रचार-क्षेत्र भारतव्यापी है, उनका हिंदी का ज्ञान उत्कृष्ट है।'

महात्मा गांधी मालवीय जी का बड़ा सम्मान करते थे। वे मालवीय जी के राष्ट्रभाषा हिंदी संबंधी विचारों से पूर्णत: सहमत थे। महात्मा गांधी कहते थे कि यह भाषा का विषय बड़ा भारी और महत्वपूर्ण है। अंतत: हिंदी के महत्व को सभी ने समझा। कालांतर में कांग्रेस के अधिवशेन में हिंदी को ही राष्ट्रभाषा बनाने के प्रस्ताव को स्वीकृति प्राप्त हुई। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 14 सितम्बर, 1949 के दिन हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया। भारतीय संविधान में राजभाषा के हिंदी के प्रबंध में अनुच्छेद 343(1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।

आज इस देश के लोगों को शायद इस बात का अहसास भी न होगा कि भारत में हिंदी को विश्वविद्यालयों में एक विषय के रूप में कोई भी मान्यता प्राप्त नहीं थी। सर्वप्रथम मालवीय जी ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी को एक विषय के रूप में मान्यता दी। आज हिंदी में पढ़ाई सारे विश्वविद्यालयों में प्रचलित है। हिंदी साहित्य के पुरोधा आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पं. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि इसी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के रत्न थे। मालवीय जी को हिंदी के अखबारों का जनक कहना भी अतिशयोक्ति न होगी। कालाकॉकर (प्रतापगढ़) से हिंदुस्तान का संपादन करने के बाद उन्होंने प्रयाग से वर्ष 1907 में प्रकाशित 'अभ्युदय' और उसके बाद 'मर्यादा' का संपादन किया। इन समाचारपत्रों और इनके संपादकीय को जो सफलता और लोकप्रियता मिली वह अन्य समाचार पत्रों के लिये मार्गदर्शक बनी।

■ **विश्वनाथ त्रिपाठी**

(राजभाषा भारती से साभार)

अटल जी की प्रतिनिधि कविताएँ

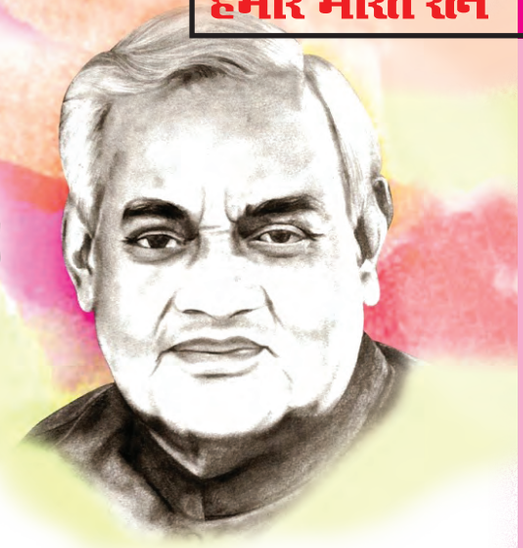

यक्ष प्रश्न

जो कल थे,
वे आज नहीं हैं।
जो आज हैं,
वे कल नहीं होंगे।
होने, न होने का क्रम,
इसी तरह चलता रहेगा,
हम हैं, हम रहेंगे,
यह भ्रम भी सदा पलता रहेगा।

सत्य क्या है?
होना या न होना?
या दोनों ही सत्य हैं?
जो है, उसका होना सत्य है,
जो नहीं हैं, उसका न होना सत्य है।
मुझे लगता है कि
होना-न-होना एक ही सत्य के
दो आयाम हैं,
शेष सब समझ का फेर,
बुद्धि के व्यायाम हैं।
किन्तु न होने के बाद क्या होता है,
यह प्रश्न अनुत्तरित है।

प्रत्येक नया नचिकेता,
इस प्रश्न की खोज में लगा है।
सभी साधकों को इस प्रश्न ने ठगा है।
शायद यह प्रश्न, प्रश्न ही रहेगा।
यदि कुछ प्रश्न अनुत्तरित रहें
तो इसमें बुराई क्या है?
हाँ, खोज का सिलसिला न रुके,
धर्म की अनुभूति,
विज्ञान का अनुसंधान,
एक दिन, अवश्य ही
रुद्ध द्वार खोलेगा।
प्रश्न पूछने के बजाय
यक्ष स्वयं उत्तर बोलेगा।

आओ फिर से दिया जलाएँ

आओ फिर से दिया जलाएँ
भरी दुपहरी में अंधियारा
सूरज परछाईं से हारा
अंतरतम का नेह निचोड़ें
बुझी हुई बाती सुलगाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ

हम पड़ाव को समझे मंज़िल
लक्ष्य हुआ आंखों से ओझल
वर्तमान के मोहजाल में
आने वाला कल न भुलाएँ।

आहुति बाकी यज्ञ अधूरा
अपनों के विघ्नों ने घेरा
अंतिम जय का वज्र बनाने
नव दधीचि हड्डियां गलाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ

जीवन की ढलने लगी साँझ

जीवन की ढलने लगी सांझ
उमर घट गई
डगर कट गई

जीवन की ढलने लगी सांझ
बदले हैं अर्थ
शब्द हुए व्यर्थ
शान्ति बिना खुशियाँ हैं बांझ।

सपनों में मीत
बिखरा संगीत
ठिठक रहे पांव और झिझक रही झांझ।
जीवन की ढलने लगी सांझ

दो अनुभूतियाँ

पहली अनुभूति

बेनकाब चेहरे हैं, दाग बड़े गहरे हैं
टूटता तिलिस्म आज सच से भय खाता हूँ
गीत नहीं गाता हूँ

लगी कुछ ऐसी नज़र, बिखरा शीशे सा शहर
अपनों के मेले में मीत नहीं पाता हूँ
गीत नहीं गाता हूँ

पीठ में छुरी सा चांद, राहु गया रेखा फांद
मुक्ति के क्षणों में बार बार बंध जाता हूँ
गीत नहीं गाता हूँ

दूसरी अनुभूति

गीत नया गाता हूँ

टूटे हुए तारों से फूटे बासंती स्वर
पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर
झरे सब पीले पात कोयल की कुहुक रात

प्राची में अरुणिम की रेख देख पाता हूँ
गीत नया गाता हूँ

टूटे हुए सपनों की कौन सुने सिसकी
अन्तर को चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी
हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा,

काल के कपाल पे लिखता मिटाता हूँ
गीत नया गाता हूँ

बेटों वाली विधवा

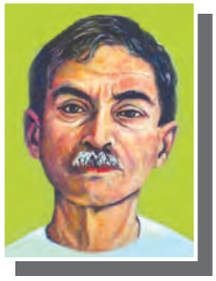

मुंशी प्रेमचंद

पंडित अयोध्यानाथ का देहांत हुआ तो सबने कहा, ईश्वर आदमी को ऐसी ही मौत दे। चार जवान बेटे थे, एक लड़की। चारों लड़कों के विवाह हो चुके थे, केवल लड़की क्वाँरी थी। संपत्ति भी काफ़ी छोड़ी थी। एक पक्का मकान, दो बग़ीचे, कई हज़ार के गहने और बीस हज़ार नकद। विधवा फूलमती को शोक तो हुआ और कई दिन तक बेहाल पड़ी रही, लेकिन जवान बेटों को सामने देखकर उसे ढाढ़स हुआ। चारों लड़के एक से एक सुशील, चारों बहुएँ एक से एक बढ़कर आज्ञाकारिणी। जब वह रात को लेटती, तो चारों बारी-बारी से उसके पाँव दबातीं; वह स्नान करके उठती, तो उसकी साड़ी छाँटतीं। सारा घर उसके इशारे पर चलता था। बड़ा लड़का कामतानाथ, एक दफ़्तर में 50 रु. पर नौकर था, छोटा उमानाथ, डॉक्टरी पास कर चुका था और कहीं औषधालय खोलने की फ़िक्र में था, तीसरा दयानाथ, बी. ए. में फेल हो गया था और पत्रिकाओं में लेख लिखकर कुछ न कुछ कमा लेता था, चौथा सीतानाथ, चारों में सबसे कुशाग्र बुद्धि और होनहार था और अबकी साल बी. ए. प्रथम श्रेणी में पास करके एम. ए. की तैयारी में लगा हुआ था। किसी लड़के में वह दुर्व्यसन, वह छैलापन, वह लुटाऊपन न था, जो माता-पिता को जलाता और कुल मर्यादा को डुबाता है। फूलमती घर की मालकिन थी। गो कि कुंजियाँ बड़ी बहू के पास रहती थीं। बुढ़िया में वह अधिकार प्रेम न था, जो वृद्धजनों को कटु और कलहशील बना दिया करता है; किन्तु उसकी इच्छा के बिना कोई बालक मिठाई तक न मँगा सकता था।

संध्या हो गयी थी। पंडित को मरे आज बारहवाँ दिन था। कल तेरही है। ब्रह्मभोज होगा। बिरादरी के लोग निमंत्रित होंगे। उसी की तैयारियाँ हो रही थीं। फूलमती अपनी कोठरी में बैठी देख रही थी, पल्लेदार बोरे में आटा लाकर रख रहे हैं। घी के टिन आ रहे हैं। शाक-भाजी के टोकरे, शक्कर की बोरियाँ, दही के मटके चले आ रहे हैं। महापात्र के लिए दान की चीज़ें लायी गयीं- बर्तन, कपड़े, पलंग, बिछावन, छाते, जूते, छड़ियाँ, लालटेनें आदि; किन्तु फूलमती को कोई चीज़ नहीं दिखायी गयी। नियमानुसार ये सब सामान उसके पास आने चाहिए थे। वह प्रत्येक वस्तु को देखती, उसे पसंद करती, उसकी मात्रा में कमी बेशी का फैसला करती; तब इन चीज़ों को भंडारे में रखा जाता। क्यों उसे दिखाने और उसकी राय लेने की जरूरत नहीं समझी गयी? अच्छा वह आटा तीन ही बोरा क्यों आया? उसने तो पाँच बोरों के लिए कहा था। घी भी पाँच ही कनस्तर है। उसने तो दस कनस्तर मँगवाए थे। इसी तरह शाक-भाजी, शक्कर, दही आदि में भी कमी की गयी होगी। किसने उसके हुक्म में हस्तक्षेप किया? जब उसने एक बात तय कर दी, तब किसे उसको घटाने-बढ़ाने का अधिकार है? आज चालीस वर्षों से घर के प्रत्येक मामले में फूलमती की बात सर्वमान्य थी। उसने सौ कहा तो सौ खर्च किये गये, एक कहा तो एक। किसी ने मीनमेख न की। यहाँ तक कि पं. अयोध्यानाथ भी उसकी इच्छा के विरूद्ध कुछ न करते थे; पर आज उसकी आँखों के सामने प्रत्यक्ष रूप से उसके हुक्म की उपेक्षा की जा रही है! इसे वह क्योंकर स्वीकार कर सकती? कुछ देर तक तो वह जब्त किये बैठी रही; पर अंत में न रहा गया। स्वायत्त शासन उसका स्वभाव हो गया था। वह क्रोध में भरी हुई आयी और कामतानाथ से बोली- 'क्या आटा तीन ही बोरे लाये? मैंने तो पाँच बोरों के लिए कहा था और घी भी पाँच ही टिन मँगवाया! तुम्हें याद है, मैंने दस कनस्तर कहा था? किफ़ायत को मैं बुरा नहीं समझती; लेकिन जिसने यह कुआँ खोदा, उसी की आत्मा पानी को तरसे, यह कितनी लज्जा की बात है!'

कामतानाथ ने क्षमा-याचना न की, अपनी भूल भी स्वीकार न की, लज्जित भी नहीं हुआ। एक मिनट तो विद्रोही भाव से खड़ा रहा, फिर बोला- 'हम लोगों की सलाह तीन ही बोरों की हुई और तीन बोरे के लिए पाँच टिन घी काफ़ी था। इसी हिसाब से और चीज़ें भी कम कर दी गयी हैं।'

फूलमती उग्र होकर बोली- 'किसकी राय से आटा कम किया गया?'

'हम लोगों की राय से।'

'तो मेरी राय कोई चीज़ नहीं है?'

'है क्यों नहीं; लेकिन अपना हानि-लाभ तो हम समझते हैं?'

फूलमती हक्की-बक्की होकर उसका मुँह ताकने लगी। इस वाक्य का आशय उसकी समझ में न आया। अपना हानि-लाभ! अपने घर में हानि-लाभ की ज़िम्मेदार वह आप है। दूसरों को, चाहे वे उसके पेट के जन्मे पुत्र ही क्यों न हों, उसके कामों में हस्तक्षेप करने का क्या अधिकार? यह लौंडा तो इस ढिठाई से जवाब दे रहा है, मानो घर उसी का है, उसी ने मर-मरकर गृहस्थी जोड़ी है, मैं तो गैर हूँ! जरा इसकी हेकड़ी तो देखो।

उसने तमतमाये हुए मुख से कहा- 'मेरे हानि-लाभ के ज़िम्मेदार तुम नहीं हो। मुझे अख़्तियार है, जो उचित समझूँ, वह करूँ। अभी जाकर दो बोरे आटा और पाँच टिन घी और लाओ और आगे के लिए खबरदार, जो किसी ने मेरी बात काटी।'

अपने विचार में उसने काफ़ी तंबीह कर दी थी। शायद इतनी कठोरता अनावश्यक थी। उसे अपनी उग्रता पर खेद हुआ। लड़के ही तो हैं, समझे होंगे कुछ किफ़ायत करनी चाहिए। मुझसे इसलिए न पूछा होगा कि अम्माँ तो ख़ुद हरेक काम में किफ़ायत करती हैं। अगर इन्हें मालूम होता कि इस काम में मैं किफ़ायत पसंद न करूँगी, तो कभी इन्हें मेरी उपेक्षा करने का साहस न होता। यद्यपि कामतानाथ अब भी उसी जगह खड़ा था और उसकी भावभंगी से ऐसा ज्ञात होता था कि इस आज्ञा का पालन करने के लिए वह बहुत उत्सुक नहीं, पर फूलमती निश्चिंत होकर अपनी कोठरी में चली गयी। इतनी तंबीह पर भी किसी को उसकी अवज्ञा करने की सामर्थ्य हो सकती है, इसकी संभावना का ध्यान भी उसे न आया।

पर ज्यों-ज्यों समय बीतने लगा, उस पर यह हकीकत खुलने लगी कि इस घर में अब उसकी वह हैसियत नहीं रही, जो दस-बारह दिन पहले थी। संबंधियों के यहाँ के नेवते में शक्कर, मिठाई, दही, अचार आदि आ रहे थे। बड़ी बहू इन वस्तुओं को स्वामिनी भाव से सँभाल-सँभालकर रख रही थी। कोई भी उससे पूछने नहीं आता। बिरादरी के लोग जो कुछ पूछते हैं, कामतानाथ से या बड़ी बहू से। कामतानाथ कहाँ का बड़ा इंतजामकार है, रात-दिन भंग पिये पड़ा रहता है किसी तरह रो-धोकर दफ़्तर चला जाता है। उसमें भी महीने में पंद्रह नागों से कम नहीं होते। वह तो कहो, साहब पंडित जी का लिहाज़ करता है, नहीं अब तक कभी का निकाल देता और बड़ी बहू जैसी फूहड़ औरत भला इन सब बातों को क्या समझेगी! अपने कपड़े-लत्ते तक तो जतन से रख नहीं सकती, चली है गृहस्थी चलाने! भद होगी और क्या। सब मिलकर कुल की नाक कटवायेंगे। वक्त पर कोई न कोई चीज़ कम हो जायेगी। इन कामों के लिए बड़ा अनुभव चाहिए। कोई चीज़ तो इतनी बन जायेगी कि मारी-मारी फिरेगी। कोई चीज़ इतनी कम बनेगी कि किसी पत्तल पर पहुँचेगी, किसी पर नहीं। आख़िर इन सबों को हो क्या गया है! अच्छा, बहू तिजोरी क्यों खोल रही है? वह मेरी आज्ञा के बिना तिजोरी खोलने वाली कौन होती है? कुंजी उसके पास है अवश्य; लेकिन जब तक मैं रुपये न निकलवाऊँ, तिजोरी नहीं खुलती। आज तो इस तरह खोल रही है, मानो मैं कुछ हूँ ही नहीं। यह मुझसे न बर्दाश्त होगा!

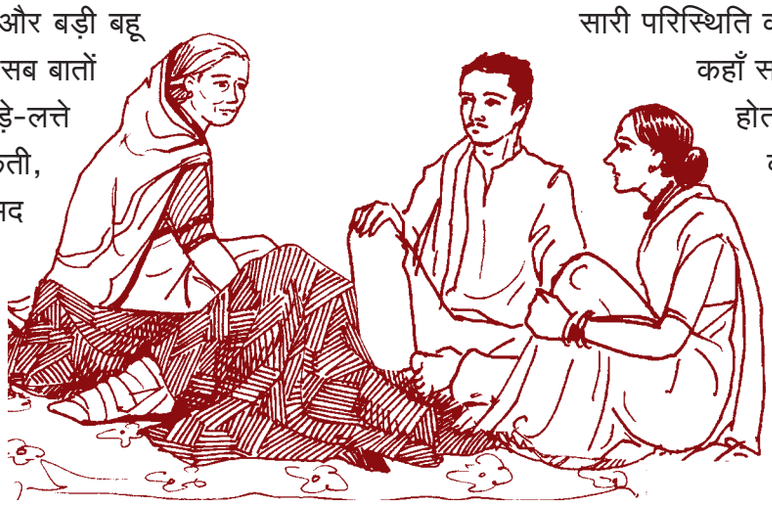

वह झमककर उठी और बहू के पास जाकर कठोर स्वर में बोली- 'तिजोरी क्यों खोलती हो बहू, मैंने तो खोलने को नहीं कहा?'

बड़ी बहू ने नि:संकोच भाव से उत्तर दिया- 'बाज़ार से सामान आया है, तो दाम न दिया जायेगा।'

'कौन चीज़ किस भाव में आयी है और कितनी आयी है, यह मुझे कुछ नहीं मालूम! जब तक हिसाब-किताब न हो जाये, रुपये कैसे दिये जायँ?'

'हिसाब किताब सब हो गया है।'

'किसने किया?'

'अब मैं क्या जानूँ किसने किया? जाकर मरदों से पूछो! मुझे हुक्म मिला, रुपये लाकर दे दो, रुपये लिये जाती हूँ!'

फूलमती ख़ून का घूँट पीकर रह गयी। इस वक्त बिगड़ने का अवसर न था। घर में मेहमान स्त्री-पुरूष भरे हुए थे। अगर इस वक्त उसने लड़कों को डाँटा, तो लोग यही कहेंगे कि इनके घर में पंडित जी के मरते ही फूट पड़ गयी। दिल पर पत्थर रखकर फिर अपनी कोठरी में चली गयी। जब मेहमान विदा हो जायेंगे, तब वह एक-एक की खबर लेगी। तब देखेगी, कौन उसके सामने आता है और क्या कहता है। इनकी सारी चौकड़ी भुला देगी।

किन्तु कोठरी के एकांत में भी वह निश्चिंत न बैठी थी। सारी परिस्थिति को गिद्ध दृष्टि से देख रही थी, कहाँ सत्कार का कौन-सा नियम भंग होता है, कहाँ मर्यादाओं की उपेक्षा की जाती है। भोज आरम्भ हो गया। सारी बिरादरी एक साथ पंगत में बैठा दी गयी। आँगन में मुश्किल से दो सौ आदमी बैठ सकते हैं। ये पाँच सौ आदमी इतनी-सी जगह में कैसे बैठ जायेंगे? क्या आदमी के ऊपर आदमी

बिठाए जायेंगे? दो पंगतों में लोग बिठाये जाते तो क्या बुराई हो जाती? यही तो होता कि बारह बजे की जगह भोज दो बजे समाप्त होता; मगर यहाँ तो सबको सोने की जल्दी पड़ी हुई है। किसी तरह यह बला सिर से टले और चैन से सोयें! लोग कितने सटकर बैठे हुए हैं कि किसी को हिलने की भी जगह नहीं। पत्तल एक-पर-एक रखे हुए हैं। पूरियाँ ठंडी हो गईं। लोग गरम-गरम माँग रहे हैं। मैदे की पूरियाँ ठंडी होकर चिमड़ी हो जाती हैं। इन्हें कौन खायेगा? रसोइये को कढ़ाव पर से न जाने क्यों उठा दिया गया? यही सब बातें नाक कटाने की हैं।

सहसा शोर मचा, तरकारियों में नमक नहीं। बड़ी बहू जल्दी-जल्दी नमक पीसने लगी। फूलमती क्रोध के मारे ओठ चबा रही थी, पर इस अवसर पर मुँह न खोल सकती थी। नमक पिसा और पत्तलों पर डाला गया। इतने में फिर शोर मचा- पानी गरम है, ठंडा पानी लाओ! ठंडे पानी का कोई प्रबन्ध न था, बर्फ़ भी न मँगाई गयी। आदमी बाज़ार दौड़ाया गया, मगर बाज़ार में इतनी रात गये बर्फ़ कहाँ? आदमी ख़ाली हाथ लौट आया। मेहमानों को वही नल का गरम पानी पीना पड़ा। फूलमती का बस चलता, तो लड़कों का मुँह नोंच लेती। ऐसी छीछालेदर उसके घर में कभी न हुई थी। उस पर सब मालिक बनने के लिए मरते हैं। बर्फ़ जैसी जरूरी चीज़ मँगवाने की भी किसी को सुधि न थी! सुधि कहाँ से रहे- जब किसी को गप लड़ाने से फुर्सत मिले। मेहमान अपने दिल में क्या कहेंगे कि चले हैं बिरादरी को भोज देने और घर में बर्फ़ तक नहीं!

अच्छा, फिर यह हलचल क्यों मच गयी? अरे, लोग पंगत से उठे जा रहे हैं। क्या मामला है?

फूलमती उदासीन न रह सकी। कोठरी से निकलकर बरामदे में आयी और कामतानाथ से पूछा- 'क्या बात हो गयी लल्ला? लोग उठे क्यों जा रहे हैं?' कामता ने कोई जवाब न दिया। वहाँ से खिसक गया। फूलमती झुँझलाकर रह गयी। सहसा कहारिन मिल गयी। फूलमती ने उससे भी यह प्रश्न किया। मालूम हुआ, किसी के शोरबे में मरी हुई चुहिया निकल आयी। फूलमती चित्रलिखित-सी वहीं खड़ी रह गयी। भीतर ऐसा उबाल उठा कि दीवार से सिर टकरा ले! अभागे भोज का प्रबन्ध करने चले थे। इस फूहड़पन की कोई हद है, कितने आदमियों का धर्म सत्यानाश हो गया! फिर पंगत क्यों न उठ जाये? आँखों से देखकर अपना धर्म कौन गँवायेगा? हा! सारा किया-धरा मिट्टी में मिल गया। सैकड़ों रुपये पर पानी फिर गया! बदनामी हुई वह अलग।

मेहमान उठ चुके थे। पत्तलों पर खाना ज्यों-का-त्यों पड़ा हुआ था। चारों लड़के आँगन में लज्जित खड़े थे। एक दूसरे को इल्जाम दे रहा था। बड़ी बहू अपनी देवरानियों पर बिगड़ रही थी। देवरानियाँ सारा दोष कुमुद के सिर डालती थीं। कुमुद खड़ी रो रही थी। उसी वक्त फूलमती झल्लायी हुई आकर बोली- 'मुँह में कालिख लगी कि नहीं या अभी कुछ कसर बाकी है? डूब मरो, सब-के-सब जाकर चिल्लू-भर पानी में! शहर में कहीं मुँह दिखाने लायक़ भी नहीं रहे।' किसी लड़के ने जवाब न दिया।

फूलमती और भी प्रचंड होकर बोली- 'तुम लोगों को क्या? किसी को शर्म-हया तो है नहीं। आत्मा तो उनकी रो रही है, जिन्होंने अपनी ज़िन्दगी घर की मरजाद बनाने में ख़राब कर दी। उनकी पवित्र आत्मा को तुमने यों कलंकित किया? शहर में थुड़ी-थुड़ी हो रही है। अब कोई तुम्हारे द्वार पर पेशाब करने तो आयेगा नहीं!'

कामतानाथ कुछ देर तक तो चुपचाप खड़ा सुनता रहा। आखिर झुँझला कर बोला- 'अच्छा, अब चुप रहो अम्माँ। भूल हुई, हम सब मानते हैं, बड़ी भयंकर भूल हुई, लेकिन अब क्या उसके लिए घर के प्राणियों को हलाल-कर डालोगी? सभी से भूलें होती हैं। आदमी पछताकर रह जाता है। किसी की जान तो नहीं मारी जाती?'

बड़ी बहू ने अपनी सफाई दी- 'हम क्या जानते थे कि बीबी (कुमुद) से इतना-सा काम भी न होगा। इन्हें चाहिए था कि देखकर तरकारी कढ़ाव में डालतीं। टोकरी उठाकर कढ़ाव में डाल दी! हमारा क्या दोष!'

कामतानाथ ने पत्नी को डाँटा- 'इसमें न कुमुद का कसूर है, न तुम्हारा, न मेरा। संयोग की बात है। बदनामी भाग में लिखी थी, वह हुई। इतने बड़े भोज में एक-एक मुट्ठी तरकारी कढ़ाव में नहीं डाली जाती! टोकरे-के-टोकरे उड़ेल दिए जाते हैं। कभी-कभी ऐसी दुर्घटना होती है। पर इसमें कैसी जग-हँसाई और कैसी नक-कटाई। तुम खामखाह जले पर नमक छिड़कती हो!'

फूलमती ने दाँत पीसकर कहा- 'शरमाते तो नहीं, उलटे और बेहयाई की बातें करते हो।'

कामतानाथ ने नि:संकोच होकर कहा- 'शरमाऊँ क्यों, किसी की चोरी की है? चीनी में चींटे और आटे में घुन, यह नहीं देखे जाते। पहले हमारी निगाह न पड़ी, बस, यहीं बात बिगड़ गयी। नहीं, चुपके से चुहिया निकालकर फेंक देते। किसी को खबर भी न होती।'

फूलमती ने चकित होकर कहा- 'क्या कहता है, मरी चुहिया खिलाकर सबका धर्म बिगाड़ देता?'

कामता हँसकर बोला- 'क्या पुराने जमाने की बातें करती हो अम्माँ। इन बातों से धर्म नहीं जाता? यह धर्मात्मा लोग जो पत्तल पर से उठ गये हैं, इनमें से कौन है, जो भेड़-बकरी का मांस न खाता हो? तालाब के कछुए और घोंघे तक तो किसी से बचते नहीं। . जरा-सी चुहिया में क्या रखा था!'

फूलमती को ऐसा प्रतीत हुआ कि अब प्रलय आने में बहुत देर नहीं है। जब पढ़े-लिखे आदमियों के मन में ऐसे अधार्मिक भाव आने लगे, तो फिर धर्म की भगवान ही रक्षा करें। अपना-सा मुँह लेकर चली गयी।

(2) दो महीने गुजर गये हैं। रात का समय है। चारों भाई दिन के काम से छुट्टी पाकर कमरे में बैठे गप-शप कर रहे हैं। बड़ी बहू भी षडयंत्र में शरीक है। कुमुद के विवाह का प्रश्न छिड़ा हुआ है।

कामतानाथ ने मसनद पर टेक लगाते हुए कहा- 'दादा की बात दादा के साथ गयी। पंडित विद्वान भी हैं और कुलीन भी होंगे। लेकिन जो आदमी अपनी विद्या और कुलीनता को रुपयों पर बेचे, वह नीच है। ऐसे नीच आदमी के लड़के से हम कुमुद का विवाह सेंत में भी न करेंगे, पाँच हज़ार तो दूर की बात है। उसे बताओ धता और किसी दूसरे वर की तलाश करो। हमारे पास कुल बीस हज़ार ही तो हैं। एक-एक के हिस्से में पाँच-पाँच हज़ार आते हैं। पाँच हज़ार दहेज में दे दें, और पाँच हज़ार नेग-न्योछावर, बाजे-गाजे में उड़ा दें, तो फिर हमारी बधिया ही बैठ जायेगी।'

उमानाथ बोले- 'मुझे अपना औषधालय खोलने के लिए कम-से-कम पाँच हज़ार की जरूरत है। मैं अपने हिस्से में से एक पाई भी नहीं दे सकता। फिर खुलते ही आमदनी तो होगी नहीं। कम-से-कम साल-भर घर से खाना पड़ेगा।'

दयानाथ एक समाचार-पत्र देख रहे थे। आँखों से ऐनक उतारते हुए बोले- 'मेरा विचार भी एक पत्र निकालने का है। प्रेस और पत्र में कम-से-कम दस हज़ार का कैपिटल चाहिए। पाँच हज़ार मेरे रहेंगे तो कोई-न-कोई साझेदार भी मिल जायेगा। पत्रों में लेख लिखकर मेरा निर्वाह नहीं हो सकता।'

कामतानाथ ने सिर हिलाते हुए कहा- 'अजी, राम भजो, सेंत में कोई लेख छापता नहीं, रुपये कौन देता है।'

दयानाथ ने प्रतिवाद किया- 'नहीं, यह बात तो नहीं है। मैं तो कहीं भी बिना पेशगी पुरस्कार लिये नहीं लिखता।'

कामता ने जैसे अपने शब्द वापस लिये- 'तुम्हारी बात मैं नहीं कहता भाई। तुम तो थोड़ा-बहुत मार लेते हो, लेकिन सबको तो नहीं मिलता।'

बड़ी बहू ने श्रद्धा भाव से कहा- 'कन्या भाग्यवान हो तो दरिद्र घर में भी सुखी रह सकती है। अभागी हो, तो राजा के घर में भी रोयेगी। यह सब नसीबों का खेल है।'

कामतानाथ ने स्त्री की ओर प्रशंसा-भाव से देखा- 'फिर इसी साल हमें सीता का विवाह भी तो करना है।'

सीतानाथ सबसे छोटा था। सिर झुकाये भाइयों की स्वार्थ-भरी बातें सुन-सुनकर कुछ कहने के लिए उतावला हो रहा था। अपना नाम सुनते ही बोला- 'मेरे विवाह की आप लोग चिन्ता न करें। मैं जब तक किसी धंधे में न लग जाऊँगा, विवाह का नाम भी न लूँगा; और सच पूछिये तो मैं विवाह करना ही नहीं चाहता। देश को इस समय बालकों की जरूरत नहीं, काम करने वालों की जरूरत है। मेरे हिस्से के रुपये आप कुमुद के विवाह में खर्च कर दें। सारी बातें तय हो जाने के बाद यह उचित नहीं है कि पंडित मुरारीलाल से संबंध तोड़ लिया जाये।'

उमा ने तीव्र स्वर में कहा- 'दस हज़ार कहाँ से आयेंगे?'

सीता ने डरते हुए कहा- 'मैं तो अपने हिस्से के रुपये देने को कहता हूँ।'

'और शेष?'

'मुरारीलाल से कहा जाये कि दहेज में कुछ कमी कर दें। वे इतने स्वार्थांध नहीं हैं कि इस अवसर पर कुछ बल खाने को तैयार न हो जायें, अगर वह तीन हज़ार में संतुष्ट हो जाएं तो पाँच हज़ार में विवाह हो सकता है।'

उमा ने कामतानाथ से कहा- 'सुनते हैं भाई साहब, इसकी बातें।'

दयानाथ बोल उठे- 'तो इसमें आप लोगों का क्या नुकसान है? मुझे तो इस बात से खुशी हो रही है कि भला, हममें कोई तो त्याग करने योग्य है। इन्हें तत्काल रुपये की जरूरत नहीं है। सरकार से वज़ीफ़ा पाते ही हैं। पास होने पर कहीं-न-कहीं जगह मिल जायेगी। हम लोगों की हालत तो ऐसी नहीं है।'

कामतानाथ ने दूरदर्शिता का परिचय दिया- 'नुकसान की एक ही कही। हममें से एक को कष्ट हो तो क्या और लोग बैठे देखेंगे? यह अभी लड़के हैं, इन्हें क्या मालूम, समय पर एक रुपया एक लाख का काम करता है। कौन जानता है, कल इन्हें विलायत जाकर पढ़ने के लिए सरकारी वज़ीफ़ा मिल जाये या सिविल सर्विस में आ जायें। उस वक़्त सफर की तैयारियों में चार-पाँच हज़ार लग जाएँगे। तब किसके सामने हाथ फैलाते फिरेंगे? मैं यह नहीं चाहता कि दहेज के पीछे इनकी ज़िन्दगी नष्ट हो जाये।'

इस तर्क ने सीतानाथ को भी तोड़ लिया। सकुचाता हुआ बोला- 'हाँ, यदि ऐसा हुआ तो बेशक मुझे रुपये की जरूरत होगी।'

'क्या ऐसा होना असंभव है?

'असभंव तो मैं नहीं समझता; लेकिन कठिन अवश्य है। वजीफे उन्हें मिलते हैं, जिनके पास सिफारिशें होती हैं, मुझे कौन पूछता है।'

'कभी-कभी सिफारिशें धरी रह जाती हैं और बिना सिफारिश वाले बाज़ी मार ले जाते हैं।'

'तो आप जैसा उचित समझें। मुझे यहाँ तक मंजूर है कि चाहे मैं विलायत न जाऊँ; पर कुमुद अच्छे घर जाये।'

कामतानाथ ने निष्ठा-भाव से कहा- 'अच्छा घर दहेज देने ही से नहीं मिलता भैया! जैसा तुम्हारी भाभी ने कहा, यह नसीबों का खेल है। मैं तो चाहता हूँ कि मुरारीलाल को जवाब दे दिया जाये और कोई ऐसा घर खोजा जाये, जो थोड़े में राजी हो जाये। इस विवाह में मैं एक हज़ार से ज़्यादा नहीं खर्च कर सकता। पंडित दीनदयाल कैसे हैं?'

उमा ने प्रसन्न होकर कहा- 'बहुत अच्छे। एम.ए., बी.ए. न सही, यजमानों से अच्छी आमदनी है।'

दयानाथ ने आपत्ति की- 'अम्माँ से भी पूछ तो लेना चाहिए।'

कामतानाथ को इसकी कोई जरूरत न मालूम हुई। बोले- 'उनकी तो जैसे बुद्धि ही भ्रष्ट हो गयी। वही पुराने युग की बातें! मुरारीलाल के नाम पर उधार खाये बैठी हैं। यह नहीं समझतीं कि वह ज़माना नहीं रहा। उनको तो बस, कुमुद मुरारी पंडित के घर जाये, चाहे हम लोग तबाह हो जायें।'

उमा ने एक शंका उपस्थित की- 'अम्माँ अपने सब गहने कुमुद को दे देंगी, देख लीजिएगा।'

कामतानाथ का स्वार्थ नीति से विद्रोह न कर सका। बोले- 'गहनों पर उनका पूरा अधिकार है। यह उनका स्त्रीधन है। जिसे चाहें, दे सकती हैं।'

उमा ने कहा- 'स्त्रीधन है तो क्या वह उसे लुटा देंगी। आख़िर वह भी तो दादा ही की कमाई है।'

'किसी की कमाई हो। स्त्रीधन पर उनका पूरा अधिकार है!'

'यह क़ानूनी गोरखधंधे हैं। बीस हज़ार में तो चार हिस्सेदार हों और दस हज़ार के गहने अम्माँ के पास रह जायें। देख लेना, इन्हीं के बल पर वह कुमुद का विवाह मुरारी पंडित के घर करेंगी।'

उमानाथ इतनी बड़ी रकम को इतनी आसानी से नहीं छोड़ सकता। वह कपट-नीति में कुशल है। कोई कौशल रचकर माता से सारे गहने ले लेगा। उस वक्त तक कुमुद के विवाह की चर्चा करके फूलमती को भड़काना उचित नहीं। कामतानाथ ने सिर हिलाकर कहा- 'भाई, मैं इन चालों को पसंद नहीं करता।'

उमानाथ ने खिसियाकर कहा- 'गहने दस हज़ार से कम के न होंगे।'

कामता अविचलित स्वर में बोले- 'कितने ही के हों; मैं अनीति में हाथ नहीं डालना चाहता।'

'तो आप अलग बैठिए। हाँ, बीच में भांजी न मारिएगा।'

'मैं अलग रहूँगा।'

'और तुम सीता?'

'अलग रहूँगा।'

लेकिन जब दयानाथ से यही प्रश्न किया गया, तो वह उमानाथ से सहयोग करने को तैयार हो गया। दस हज़ार में ढाई हज़ार तो उसके होंगे ही। इतनी बड़ी रकम के लिए यदि कुछ कौशल भी करना पड़े तो क्षम्य है।

(3) फूलमती रात को भोजन करके लेटी थी कि उमा और दया उसके पास जा कर बैठ गये। दोनों ऐसा मुँह बनाए हुए थे, मानो कोई भारी विपत्ति आ पड़ी है। फूलमती ने सशंक होकर पूछा- 'तुम दोनों घबड़ाये हुए मालूम होते हो?'

उमा ने सिर खुजलाते हुए कहा- 'समाचार-पत्रों में लेख लिखना बड़े जोखिम का काम है अम्माँ! कितना ही बचकर लिखो, लेकिन कहीं-न-कहीं पकड़ हो ही जाती है। दयानाथ ने एक लेख लिखा था। उस पर पाँच हज़ार की जमानत माँगी गयी है। अगर कल तक जमा न कर दी गयी, तो गिरफ़्तार हो जायेंगे और दस साल की सज़ा ठुक जायेगी।'

फूलमती ने सिर पीटकर कहा- 'ऐसी बातें क्यों लिखते हो बेटा? जानते नहीं हो, आजकल हमारे अदिन आए हुए हैं। जमानत किसी तरह टल नहीं सकती?'

दयानाथ ने अपराधी-भाव से उत्तर दिया- 'मैंने तो अम्माँ, ऐसी कोई बात नहीं लिखी थी; लेकिन किस्मत को क्या करूँ। हाकिम ज़िला इतना कड़ा है कि ज़रा भी रियायत नहीं करता। मैंने जितनी दौड़-धूप हो सकती थी, वह सब कर ली।'

'तो तुमने कामता से रुपये का प्रबन्ध करने को नहीं कहा?'

उमा ने मुँह बनाया- 'उनका स्वभाव तो तुम जानती हो अम्माँ, उन्हें रुपये प्राणों से प्यारे हैं। इन्हें चाहे कालापानी ही हो जाये, वह एक पाई न देंगे।'

दयानाथ ने समर्थन किया- 'मैंने तो उनसे इसका ज़िक्र ही नहीं किया।'

फूलमती ने चारपाई से उठते हुए कहा- 'चलो, मैं कहती हूँ, देगा कैसे नहीं? रुपये इसी दिन के लिए होते हैं कि गाड़कर रखने के लिए?'

उमानाथ ने माता को रोककर कहा- 'नहीं अम्माँ, उनसे कुछ न कहो। रुपये तो न देंगे, उल्टे और हाय-हाय मचायेंगे। उनको अपनी नौकरी की ख़ैरियत मनानी है, इन्हें घर में रहने भी न देंगे। अफ़सरों में जाकर खबर दे दें तो आश्चर्य नहीं।'

फूलमती ने लाचार होकर कहा- 'तो फिर जमानत का क्या प्रबन्ध करोगे? मेरे पास तो कुछ नहीं है। हाँ, मेरे गहने हैं, इन्हें ले जाओ, कहीं गिरों रखकर जमानत दे दो। और आज से कान पकड़ो कि किसी पत्र में एक शब्द भी न लिखोगे।'

दयानाथ कानों पर हाथ रखकर बोला- 'यह तो नहीं हो सकता अम्माँ, कि तुम्हारे जेवर लेकर मैं अपनी जान बचाऊँ। दस-पाँच साल की क़ैद ही तो होगी, झेल लूँगा। यहीं बैठा-बैठा क्या कर रहा हूँ!'

फूलमती छाती पीटते हुए बोली- 'कैसी बातें मुँह से निकालते हो बेटा, मेरे जीते-जी तुम्हें कौन गिरफ़्तार कर सकता है! उसका मुँह झुलस दूँगी। गहने इसी दिन के लिए हैं या और किसी दिन के लिए! जब तुम्हीं न रहोगे, तो गहने लेकर क्या आग में झोकूँगीं!'

उसने पिटारी लाकर उसके सामने रख दी।

दया ने उमा की ओर जैसे फरियाद की आँखों से देखा और बोला- 'आपकी क्या राय है भाई साहब? इसी मारे मैं कहता था, अम्माँ को बताने की जरूरत नहीं। जेल ही तो हो जाती या और कुछ?'

उमा ने जैसे सिफारिश करते हुए कहा- 'यह कैसे हो सकता था कि इतनी बड़ी वारदात हो जाती और अम्माँ को खबर न होती। मुझसे यह नहीं हो सकता था कि सुनकर पेट में डाल लेता; मगर अब करना क्या चाहिए, यह मैं खुद निर्णय नहीं कर सकता। न तो यही अच्छा लगता है कि तुम जेल जाओ और न यही अच्छा लगता है कि अम्माँ के गहने गिरों रखे जायें।'

फूलमती ने व्यथित कंठ से पूछा- 'क्या तुम समझते हो, मुझे गहने तुमसे ज़्यादा प्यारे हैं? मैं तो प्राण तक तुम्हारे ऊपर न्योछावर कर दूँ, गहनों की बिसात ही क्या है।'

दया ने दृढ़ता से कहा- 'अम्माँ, तुम्हारे गहने तो न लूँगा, चाहे मुझ पर कुछ ही क्यों न आ पड़े। जब आज तक तुम्हारी कुछ सेवा न कर सका, तो किस मुँह से तुम्हारे गहने उठा ले जाऊँ? मुझ जैसे कपूत को तो तुम्हारी कोख से जन्म ही न लेना चाहिए था। सदा तुम्हें कष्ट ही देता रहा।'

फूलमती ने भी उतनी ही दृढ़ता से कहा- 'अगर यों न लोगे, तो मैं खुद जाकर इन्हें गिरों रख दूँगी और खुद हाकिम ज़िला के पास जाकर जमानत जमा कर आऊँगी; अगर इच्छा हो तो यह परीक्षा भी ले लो। आँखें बंद हो जाने के बाद क्या होगा, भगवान जानें, लेकिन जब तक जीती हूँ तुम्हारी ओर कोई तिरछी आँखों से देख नहीं सकता।'

उमानाथ ने मानो माता पर एहसान रखकर कहा- अब तो तुम्हारे लिए कोई रास्ता नहीं रहा दयानाथ। क्या हरज है, ले लो; मगर याद रखो, ज्यों ही हाथ में रुपये आ जायें, गहने छुड़ाने पड़ेंगे। सच कहते हैं, मातृत्व दीर्घ तपस्या है। माता के सिवाय इतना स्नेह और कौन कर सकता है? हम बड़े अभागे हैं कि माता के प्रति जितनी श्रद्धा रखनी चाहिए, उसका शतांश भी नहीं रखते।

दोनों ने जैसे बड़े धर्मसंकट में पड़कर गहनों की पिटारी सँभाली और चलते बने। माता वात्सल्य-भरी आँखों से उनकी ओर देख रही थी और उसकी संपूर्ण आत्मा का आशीर्वाद जैसे उन्हें अपनी गोद में समेट लेने के लिए व्याकुल हो रहा था। आज कई महीने के बाद उसके भग्न मातृ-हृदय को अपना सर्वस्व अर्पण करके जैसे आनन्द की विभूति मिली। उसकी स्वामिनी कल्पना इसी त्याग के लिए, इसी आत्मसमर्पण के लिए जैसे कोई मार्ग ढूँढ़ती रहती थी। अधिकार या लोभ या ममता की वहाँ गँध तक न थी। त्याग ही उसका आनन्द और त्याग ही उसका अधिकार है। आज अपना खोया हुआ अधिकार पाकर अपनी सिरजी हुई प्रतिमा पर अपने प्राणों की भेंट करके वह निहाल हो गयी।

(4) तीन महीने और गुजर गये। माँ के गहनों पर हाथ साफ़ करके चारों भाई उसकी दिलजोई करने लगे थे। अपनी स्त्रियों को भी समझाते थे कि उसका दिल न दुखायें। अगर थोड़े-से शिष्टाचार से उसकी आत्मा को शांति मिलती है, तो इसमें क्या हानि है। चारों करते अपने मन की, पर माता से सलाह ले लेते या ऐसा जाल फैलाते कि वह सरला उनकी बातों में आ जाती और हरेक काम में सहमत हो जाती। बाग़ को बेचना उसे बहुत बुरा लगता था; लेकिन चारों ने ऐसी माया रची कि वह उसे बेचने पर राजी हो गयी, किन्तु कुमुद के विवाह के विषय में मतैक्य न हो सका। माँ पं. मुरारीलाल पर जमी हुई थी, लड़के दीनदयाल पर अड़े हुए थे। एक दिन आपस में कलह हो गयी।

फूलमती ने कहा- माँ-बाप की कमाई में बेटी का हिस्सा भी है। तुम्हें सोलह हज़ार का एक बाग़ मिला, पच्चीस हज़ार का एक

मकान। बीस हज़ार नकद में क्या पाँच हज़ार भी कुमुद का हिस्सा नहीं है?

कामता ने नम्रता से कहा- अम्माँ, कुमुद आपकी लड़की है, तो हमारी बहन है। आप दो-चार साल में प्रस्थान कर जायेंगी; पर हमारा और उसका बहुत दिनों तक संबंध रहेगा। तब हम यथाशक्ति कोई ऐसी बात न करेंगे, जिससे उसका अमंगल हो; लेकिन हिस्से की बात कहती हो, तो कुमुद का हिस्सा कुछ नहीं। दादा जीवित थे, तब और बात थी। वह उसके विवाह में जितना चाहते, खर्च करते। कोई उनका हाथ न पकड़ सकता था; लेकिन अब तो हमें एक-एक पैसे की किफायत करनी पड़ेगी। जो काम हज़ार में हो जाये, उसके लिए पाँच हज़ार खर्च करना कहाँ की बुद्धिमानी है?

उमानाथ से सुधारा- पाँच हज़ार क्यों, दस हज़ार कहिए।

कामता ने भवें सिकोड़कर कहा- नहीं, मैं पाँच हज़ार ही कहूँगा; एक विवाह में पाँच हज़ार खर्च करने की हमारी हैसियत नहीं है।

फूलमती ने ज़िद पकड़कर कहा- विवाह तो मुरारीलाल के पुत्र से ही होगा, पाँच हज़ार खर्च हों, चाहे दस हजार। मेरे पति की कमाई है। मैंने मर-मरकर जोड़ा है। अपनी इच्छा से खर्च करूँगी। तुम्हीं ने मेरी कोख से नहीं जन्म लिया है। कुमुद भी उसी कोख से आयी है। मेरी आँखों में तुम सब बराबर हो। मैं किसी से कुछ माँगती नहीं। तुम बैठे तमाशा देखो, मैं सब-कुछ कर लूँगी। बीस हज़ार में पाँच हज़ार कुमुद का है।

कामतानाथ को अब कड़वे सत्य की शरण लेने के सिवा और मार्ग न रहा। बोला- अम्माँ, तुम बरबस बात बढ़ाती हो। जिन रुपयों को तुम अपना समझती हो, वह तुम्हारे नहीं हैं; तुम हमारी अनुमति के बिना उनमें से कुछ नहीं खर्च कर सकतीं।

फूलमती को जैसे सर्प ने डस लिया- क्या कहा! फिर तो कहना! मैं अपने ही संचे रुपये अपनी इच्छा से नहीं खर्च कर सकती?

'वह रुपये तुम्हारे नहीं रहे, हमारे हो गये।'

'तुम्हारे होंगे; लेकिन मेरे मरने के पीछे।'

'नहीं, दादा के मरते ही हमारे हो गये!'

उमानाथ ने बेहयाई से कहा- अम्माँ, क़ानून-कायदा तो जानतीं नहीं, नाहक उछलती हैं।

फूलमती क्रोध-विह्वल रोकर बोली- भाड़ में जाये तुम्हारा कानून। मैं ऐसे क़ानून को नहीं जानती। तुम्हारे दादा ऐसे कोई धन्नासेठ नहीं थे। मैंने ही पेट और तन काटकर यह गृहस्थी जोड़ी है, नहीं आज बैठने की छाँह न मिलती! मेरे जीते-जी तुम मेरे रुपये नहीं छू सकते। मैंने तीन भाइयों के विवाह में दस-दस हज़ार खर्च किये हैं। वही मैं कुमुद के विवाह में भी खर्च करूँगी।

कामतानाथ भी गर्म पड़ा- 'आपको कुछ भी खर्च करने का अधिकार नहीं है।'

उमानाथ ने बड़े भाई को डाँटा- 'आप खामख्वाह अम्माँ के मुँह लगते हैं भाई साहब! मुरारीलाल को पत्र लिख दीजिए कि तुम्हारे यहाँ कुमुद का विवाह न होगा। बस, छुट्टी हुई। कायदा-कानून तो जानतीं नहीं, व्यर्थ की बहस करती हैं।'

फूलमती ने संयमित स्वर में कहा- 'अच्छा, क्या क़ानून है, जरा मैं भी सुनूँ।'

उमा ने निरीह भाव से कहा- 'कानून यही है कि बाप के मरने के बाद जायदाद बेटों की हो जाती है। माँ का हक केवल रोटी-कपड़े का है।'

फूलमती ने तड़पकर पूछा- 'किसने यह क़ानून बनाया है?'

उमा शांत स्थिर स्वर में बोला- 'हमारे ऋषियों ने, महाराज मनु ने, और किसने?'

फूलमती एक क्षण अवाक रहकर आहत कंठ से बोली- 'तो इस घर में मैं तुम्हारे टुकड़ों पर पड़ी हुई हूँ?'

उमानाथ ने न्यायाधीश की निर्ममता से कहा- 'तुम जैसा समझो।'

फूलमती की संपूर्ण आत्मा मानो इस वज्रपात से चीत्कार करने लगी। उसके मुख से जलती हुई चिनगारियों की भाँति यह शब्द निकल पड़े- 'मैंने घर बनवाया, मैंने संपत्ति जोड़ी, मैंने तुम्हें जन्म दिया, पाला और आज मैं इस घर में गैर हूँ? मनु का यही कानून है? और तुम उसी क़ानून पर चलना चाहते हो? अच्छी बात है। अपना घर-द्वार लो। मुझे तुम्हारी आश्रिता बनकर रहना स्वीकार नहीं। इससे कहीं अच्छा है कि मर जाऊँ। वाह रे अंधेर! मैंने पेड़ लगाया और मैं ही उसकी छाँह में खड़ी नहीं हो सकती; अगर यही कानून है, तो इसमें आग लग जाये।'

चारों युवकों पर माता के इस क्रोध और आतंक का कोई असर न हुआ। क़ानून का फ़ौलादी कवच उनकी रक्षा कर रहा था। इन काँटों का उन पर क्या असर हो सकता था?

जरा देर में फूलमती उठकर चली गयी। आज जीवन में पहली बार उसका वात्सल्य भग्न मातृत्व अभिशाप बनकर उसे धिक्कारने लगा। जिस मातृत्व को उसने जीवन की विभूति समझा था, जिसके चरणों पर वह सदैव अपनी समस्त

अभिलाषाओं और कामनाओं को अर्पित करके अपने को धन्य मानती थी, वही मातृत्व आज उसे अग्निकुंड-सा जान पड़ा, जिसमें उसका जीवन जलकर भस्म हो गया।

संध्या हो गयी थी। द्वार पर नीम का वृक्ष सिर झुकाए, निस्तब्ध खड़ा था, मानो संसार की गति पर क्षुब्ध हो रहा हो। अस्ताचल की ओर प्रकाश और जीवन का देवता फूलमती के मातृत्व ही की भाँति अपनी चिता में जल रहा था।

(5) फूलमती अपने कमरे में जाकर लेटी, तो उसे मालूम हुआ, उसकी कमर टूट गयी है। पति के मरते ही अपने पेट के लड़के उसके शत्रु हो जायेंगे, उसको स्वप्न में भी अनुमान न था। जिन लड़कों को उसने अपना हृदय-रक्त पिला-पिलाकर पाला, वही आज उसके हृदय पर यों आघात कर रहे हैं! अब वह घर उसे काँटों की सेज हो रहा था। जहाँ उसकी कुछ कद्र नहीं, कुछ गिनती नहीं, वहाँ अनाथों की भाँति पड़ी रोटियाँ खाये, यह उसकी अभिमानी प्रकृति के लिए असह्य था। पर उपाय ही क्या था? वह लड़कों से अलग होकर रहे भी तो नाक किसकी कटेगी! संसार उसे थूके तो क्या, और लड़कों को थूके तो क्या; बदनामी तो उसी की है। दुनिया यही तो कहेगी कि चार जवान बेटों के होते बुढ़िया अलग पड़ी हुई मजूरी करके पेट पाल रही है! जिन्हें उसने हमेशा नीच समझा, वही उस पर हँसेंगे। नहीं, वह अपमान इस अनादर से कहीं ज़्यादा हृदयविदारक था। अब अपना और घर का परदा ढका रखने में ही कुशल है। हाँ, अब उसे अपने को नयी परिस्थितियों के अनुकूल बनाना पड़ेगा। समय बदल गया है। अब तक स्वामिनी बनकर रही, अब लौंडी बनकर रहना पड़ेगा। ईश्वर की यही इच्छा है। अपने बेटों की बातें और लातें गैरों की बातों और लातों की अपेक्षा फिर भी गनीमत हैं।

वह बड़ी देर तक मुँह ढाँपे अपनी दशा पर रोती रही। सारी रात इसी आत्म-वेदना में कट गयी। शरद का प्रभाव डरता-डरता उषा की गोद से निकला, जैसे कोई क़ैदी छिपकर जेल से भाग आया हो। फूलमती अपने नियम के विरूद्ध आज तड़के ही उठी, रात-भर में उसका मानसिक परिवर्तन हो चुका था। सारा घर सो रहा था और वह आँगन में झाड़ू लगा रही थी। रात-भर ओस में भीगी हुई उसकी पक्की ज़मीन उसके नंगे पैरों में काँटों की तरह चुभ रही थी। पंडित जी उसे कभी इतने सवेरे उठने न देते थे। शीत उसके लिए बहुत हानिकारक था। पर अब वह दिन नहीं रहे। प्रकृति उसको भी समय के साथ बदल देने का प्रयत्न कर रही थी। झाड़ू से फुरसत पाकर उसने आग जलायी और चावल-दाल की कंकड़ियाँ चुनने लगी। कुछ देर में लड़के जागे। बहुएँ उठीं। सभी ने बुढ़िया को सर्दी से सिकुड़े हुए काम करते देखा; पर किसी ने यह न कहा कि अम्माँ, क्यों हलकान होती हो? शायद सब-के-सब बुढ़िया के इस मान-मर्दन पर प्रसन्न थे।

आज से फूलमती का यही नियम हो गया कि जी तोड़कर घर का काम करना और अंतरंग नीति से अलग रहना। उसके मुख पर जो एक आत्मगौरव झलकता रहता था, उसकी जगह अब गहरी वेदना छायी हुई नजर आती थी। जहाँ बिजली जलती थी, वहाँ अब तेल का दिया टिमटिमा रहा था, जिसे बुझा देने के लिए हवा का एक हल्का-सा झोंका काफ़ी है।

मुरारीलाल को इंकारी-पत्र लिखने की बात पक्की हो चुकी थी। दूसरे दिन पत्र लिख दिया गया। दीनदयाल से कुमुद का विवाह निश्चित हो गया। दीनदयाल की उम्र चालीस से कुछ अधिक थी, मर्यादा में भी कुछ हेठे थे, पर रोटी-दाल से खुश थे। बिना किसी ठहराव के विवाह करने पर राजी हो गये। तिथि नियत हुई, बारात आयी, विवाह हुआ और कुमुद बिदा कर दी गयी। फूलमती के दिल पर क्या गुजर रही थी, इसे कौन जान सकता है; पर चारों भाई बहुत प्रसन्न थे, मानो उनके हृदय का काँटा निकल गया हो। ऊँचे कुल की कन्या, मुँह कैसे खोलती? भाग्य में सुख भोगना लिखा होगा, सुख भोगेगी; दुख भोगना लिखा होगा, दुख झेलेगी। हरि इच्छा बेकसों का अंतिम अवलंब है। घरवालों ने जिससे विवाह कर दिया, उसमें हज़ार ऐब हों, तो भी वह उसका उपास्य, उसका स्वामी है। प्रतिरोध उसकी कल्पना से परे था।

फूलमती ने किसी काम में दख़ल न दिया। कुमुद को क्या दिया गया, मेहमानों का कैसा सत्कार किया गया, किसके यहाँ से नेवते में क्या आया, किसी बात से भी उसे सरोकार न था। उससे कोई सलाह भी ली गयी तो यही कहा- 'बेटा, तुम लोग जो करते हो, अच्छा ही करते हो। मुझसे क्या पूछते हो!'

जब कुमुद के लिए द्वार पर डोली आ गयी और कुमुद माँ के गले लिपटकर रोने लगी, तो वह बेटी को अपनी कोठरी में ले गयी और जो कुछ सौ पचास रुपये और दो-चार मामूली गहने उसके पास बच रहे थे, बेटी की अंचल में डालकर बोली- 'बेटी, मेरी तो मन की मन में रह गयी, नहीं तो क्या आज तुम्हारा विवाह इस तरह होता और तुम इस तरह विदा की जातीं!'

आज तक फूलमती ने अपने गहनों की बात किसी से न कही थी। लड़कों ने उसके साथ जो कपट-व्यवहार किया था, इसे चाहे अब तक न समझी हो, लेकिन इतना जानती थी कि गहने फिर न मिलेंगे और मनोमालिन्य बढ़ने के सिवा कुछ हाथ

न लगेगा; लेकिन इस अवसर पर उसे अपनी सफाई देने की जरूरत मालूम हुई। कुमुद यह भाव मन में लेकर जाये कि अम्माँ ने अपने गहने बहुओं के लिए रख छोड़े, इसे वह किसी तरह न सह सकती थी, इसलिए वह उसे अपनी कोठरी में ले गयी थी। लेकिन कुमुद को पहले ही इस कौशल की टोह मिल चुकी थी; उसने गहने और रुपये आँचल से निकालकर माता के चरणों में रख दिये और बोली- 'अम्माँ, मेरे लिए तुम्हारा आशीर्वाद लाखों रुपयों के बराबर है। तुम इन चीज़ों को अपने पास रखो। न जाने अभी तुम्हें किन विपत्तियों का सामना करना पड़े।'

फूलमती कुछ कहना ही चाहती थी कि उमानाथ ने आकर कहा- 'क्या कर रही है कुमुद? चल, जल्दी कर। साइत टली जाती है। वह लोग हाय-हाय कर रहे हैं, फिर तो दो-चार महीने में आयेगी ही, जो कुछ लेना-देना हो, ले लेना।'

फूलमती के घाव पर जैसे मनों नमक पड़ गया। बोली- 'मेरे पास अब क्या है भैया, जो इसे मैं दूँगी? जाओ बेटी, भगवान तुम्हारा सोहाग अमर करें।'

कुमुद विदा हो गयी। फूलमती पछाड़ खाकर गिर पड़ी। जीवन की लालसा नष्ट हो गयी।

(6) एक साल बीत गया। फूलमती का कमरा घर में सब कमरों से बड़ा और हवादार था। कई महीनों से उसने बड़ी बहू के लिए ख़ाली कर दिया था और खुद एक छोटी-सी कोठरी में रहने लगी, जैसे कोई भिखारिन हो। बेटों और बहुओं से अब उसे जरा भी स्नेह न था, वह अब घर की लौंडी थी। घर के किसी प्राणी, किसी वस्तु, किसी प्रसंग से उसे प्रयोजन न था। वह केवल इसलिए जीती थी कि मौत न आती थी। सुख या दुःख का अब उसे लेशमात्र भी ज्ञान न था। उमानाथ का औषधालय खुला, मित्रों की दावत हुई, नाच-तमाशा हुआ। दयानाथ का प्रेस खुला, फिर जलसा हुआ। सीतानाथ को वज़ीफ़ा मिला और विलायत गया, फिर उत्सव हुआ। कामतानाथ के बड़े लड़के का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ, फिर धूम-धाम हुई; लेकिन फूलमती के मुख पर आनंद की छाया तक न आयी!

कामताप्रसाद टाइफाइड में महीने-भर बीमार रहा और मरकर उठा। दयानाथ ने अबकी अपने पत्र का प्रचार बढ़ाने के लिए वास्तव में एक आपत्तिजनक लेख लिखा और छः महीने की सज़ा पायी। उमानाथ ने एक फ़ौजदारी के मामले में रिश्वत लेकर ग़लत रिपोर्ट लिखी और उसकी सनद छीन ली गयी; पर फूलमती के चेहरे पर रंज की परछायीं तक न पड़ी। उसके जीवन में अब कोई आशा, कोई दिलचस्पी, कोई चिन्ता न थी। बस, पशुओं की तरह काम करना और खाना, यही उसकी ज़िन्दगी के दो काम थे। जानवर मारने से काम करता है; पर खाता है मन से। फूलमती बेकहे काम करती थी; पर खाती थी विष के कौर की तरह। महीनों सिर में तेल न पड़ता, महीनों कपड़े न धुलते, कुछ परवाह नहीं। चेतनाशून्य हो गयी थी।

सावन की झड़ी लगी हुई थी। मलेरिया फैल रहा था। आकाश में मटियाले बादल थे, ज़मीन पर मटियाला पानी। आर्द्र वायु शीत-ज्वर और श्वास का वितरण करती फिरती थी। घर की महरी बीमार पड़ गयी। फूलमती ने घर के सारे बरतन माँजे, पानी में भीग-भीगकर सारा काम किया। फिर आग जलायी और चूल्हे पर पतीलियाँ चढ़ा दीं। लड़कों को समय पर भोजन मिलना चाहिए। सहसा उसे याद आया, कामतानाथ नल का पानी नहीं पीते। उसी वर्षा में गंगाजल लाने चली।

कामतानाथ ने पलंग पर लेटे-लेटे कहा- 'रहने दो अम्माँ, मैं पानी भर लाऊँगा, आज महरी खूब बैठ रही।'

फूलमती ने मटियाले आकाश की ओर देखकर कहा- 'तुम भीग जाओगे बेटा, सर्दी हो जायगी।'

कामतानाथ बोले- 'तुम भी तो भीग रही हो। कहीं बीमार न पड़ जाओ।' फूलमती निर्मम भाव से बोली- 'मैं बीमार न पड़ूँगी। मुझे भगवान ने अमर कर दिया है।'

उमानाथ भी वहीं बैठा हुआ था। उसके औषधालय में कुछ आमदनी न होती थी, इसलिए बहुत चिन्तित था। भाई-भावज की मुँहदेखी करता रहता था। बोला- 'जाने भी दो भैया! बहुत दिनों बहुओं पर राज कर चुकी हैं, उसका प्रायश्चित तो करने दो।'

गंगा बढ़ी हुई थी, जैसे समुद्र हो। क्षितिज सामने के कूल से मिला हुआ था। किनारों के वृक्षों की केवल फुनगियाँ पानी के ऊपर रह गयी थीं। घाट ऊपर तक पानी में डूब गये थे। फूलमती कलसा लिये नीचे उतरी, पानी भरा और ऊपर जा रही थी कि पाँव फिसला। सँभल न सकी। पानी में गिर पड़ी। पल-भर हाथ-पाँव चलाये, फिर लहरें उसे नीचे खींच ले गयीं। किनारे पर दो-चार पंडे चिल्लाए- 'अरे दौड़ो, बुढ़िया डूबी जाती है।' दो-चार आदमी दौड़े भी लेकिन फूलमती लहरों में समा गयी थी, उन बल खाती हुई लहरों में, जिन्हें देखकर ही हृदय काँप उठता था।

एक ने पूछा- 'यह कौन बुढ़िया थी?'

'अरे, वही पंडित अयोध्यानाथ की विधवा है।'

'अयोध्यानाथ तो बड़े आदमी थे?'

'हाँ थे तो, पर इसके भाग्य में ठोकर खाना लिखा था।'

'उनके तो कई लड़के बड़े-बड़े हैं और सब कमाते हैं?'

'हाँ, सब हैं भाई; मगर भाग्य भी तो कोई वस्तु है!' ■

लौटाया धन

हरियाणा में रोहतक और फिरोजपुर मुख्य मार्ग पर एक बड़ा तालाब है। इस मार्ग पर चलनेवाले यात्रियों के लिये यह आकर्षण का केन्द्र है। अनुमान है कि यह अब भी दस एकड़ क्षेत्र में फैला होगा। लोकोक्ति है कि अपने निर्माणकाल में यह तालाब चालीस एकड़ क्षेत्र के घेरे में फैला था। इसका निर्माण कैसे हुआ, इसपर यहाँ एक कहानी प्रसिद्ध है। कहते हैं कि प्राचीनकाल में पंचकुलामें एक सेठ रहता था। वह अपार सम्पत्तिका मालिक था। इधर रोहतक के पास गरीब किसान रहता था। उसका नाम लक्खी था। वह जी-तोड़ परिश्रम करता फिर भी फटेहाल रहता था। एक बार सेठसे कुछ सहायता लेने के लिये उसके घर गया। लक्खी की दीन दशा देखकर सेठ को दया आ गयी। सेठने उसे रुपये दिये। उस समय चाँदी के रुपये का चलन था। रुपयों का भारी बोझ हो गया। लक्खी अपनी पीठपर लादकर उन रुपयों को अपने घर लाया।

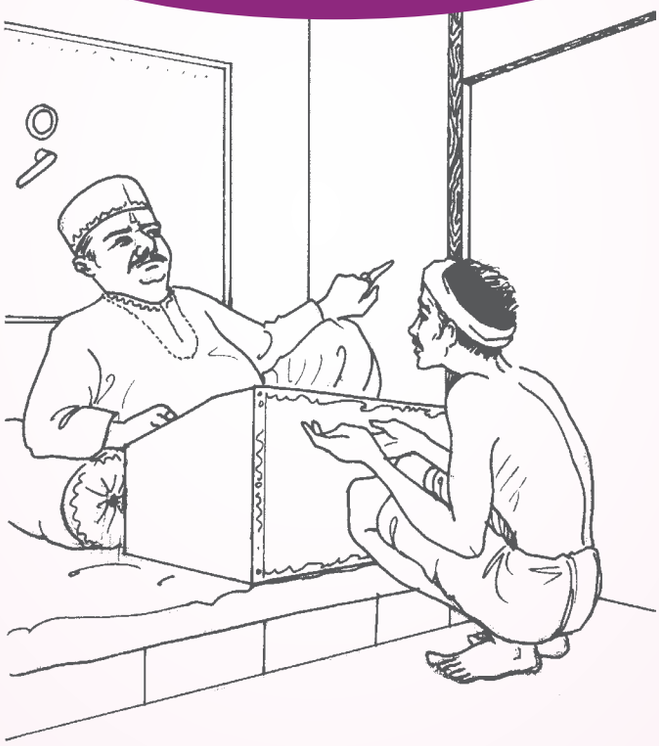

लक्खी की पत्नी ने जब वह धन देखा तो जल-भुन गयी। बोली यह भारी धनका कर्ज तुमने किस लिये लिया ? कैसे चुकाओगे ? लक्खी झिड़ककर बोला 'चल रहने दे तू ! कौन चुकायेगा कर्ज ! सेठ उन्हींको कर्ज देता है, जो इस जन्म में कर्ज लेकर अगले जन्म में चुका सकें।'

'अच्छा तो इससे तुमने यह कर्ज ओढ़ लिया? अधर्म का डर नहीं लगा?' लक्खी की पत्नी बहुत नाराज हुई। उसने रात का खाना नहीं खाया। सुबह से ही पति से लड़ने लगी। लक्खी दुखी हो गया। कहा - सुनती हो ? अब उपवास और लड़ाई बन्द करो। मैं अभी इस धनको सेठ के पास लौटा आता हूँ। पत्नी खुश हो गयी। बोली 'अच्छे काम में देर नहीं करो।'

लक्खीने रुपये के थैली को पीठपर लाद लिया और पुनः सेठके घर पहुँचा। सेठ चकित। पूछा- 'क्यों लक्खी। यहाँ फिर क्यों लाया यह माया।'

लक्खी बोला 'सेठजी अपना सब पावना सम्भाल लो, मुझे कर्ज नहीं चाहिये।' सेठने ये रुपये लेने से मना कर दिया। कहा 'मैं एक जन्म भरके लिये कर्ज दे चुका हूँ। रुपये तुम ले जाओ।' लक्खीने कहा - 'यह भारी कर्ज मैं अगले जन्म में भी कैसे चुकाऊँगा ? इसीसे लौटाने आया हूँ।' पर सेठ नहीं माना। लक्खी पीठ पर रुपया रख वापस घर आया। वह एक संकल्प कर चुका था। उसने पत्नीसे कहा -'सुनती हो, सेठने रुपये लेने से इनकार कर दिया। अब मैं उसकी एक-एक पाई तालाब बनाने में खपा दूँगा और सबसे कह दूंगा - यह तालाब सेठ का ही है। मैं भी इसका एक चुल्लू पानी नहीं छुऊँगा।'

और तब रोहतक और फिरोजपुर के बीच धराया गाँव में 40 एकड़ क्षेत्र में बनने लगा वह विशाल तालाब। चार वर्षों में बनकर तैयार हुआ। यह तालाब जल से पूरा भर गया, परंतु जब कोई उसका जल लेने आता तो लक्खी उन्हें मना कर देता। कहता - 'भाई यह तालाब लक्खी का नहीं है। सेठ हरभजन शाह का है। उससे पूछे बिना इसका पानी मत लेना।' अतः मनुष्य और पशु-पक्षी उस सरोवरसे प्यासे ही लौटने लगे। सेठ को यह समाचार मिला तो दौड़ा आया। लक्खी से बोला - 'मैं तुम्हारे कर्ज को चुकता लिखकर पावती दे देता हूँ। प्यासे लोगों को जल पीने दो इस सरोवर का।'

लक्खीने सन्तोष की साँस ली। बोला -'सेठजी। तालाब आपका है, चाहे जो करो, पर लक्खी को कर्ज से उद्धार कर दो।' लक्खी उऋण हो गया। आज भी लोग उस तालाब को लक्खी ताल ही कहते हैं।

- श्री उमेश प्रसाद सिंह

(कल्याण से साभार)

हँसगुल्ले

पत्नी - बाइक जरा धीरे चलाओ मुझे डर लगता है।
पति - अरे, पगली डरती क्यों है? तू भी मेरी तरह आँखे बंद कर ले।

धीरु - शक्लें भी कभी-कभी धोखा दे जाती हैं। एक बार मैं जब मदर इंडिया फिल्म देखने गया तो लोगों ने मुझे सुनील दत्त समझ कर कंधे पर उठा लिया।
वीरु - इसमें क्या खास बात है। मैं क्रिकेट मैच देखने गया तो लोगों ने मुझे सुनील गावस्कर समझ कर ऑटोग्राफ लेने शुरु किए।
गुरु - यार ! तुम लोग भी कैसी छोटी-छोटी बातें करते हो। मेरी सुनो - पिछली होली पर जब मैं दोस्तों के साथ होली खेलकर घर लौटा तो मेरी बीबी बोली 'हे भगवान! आप ये कैसा भेष बनाकर आये हो।'

गुरु बाल कटवाने गया तो नाई ने पूछा - बाल छोटे करने हैं ?
गुरु - बड़े कर सकते हो तो बड़े कर दो।

जज - तुमने 10 साल से अपनी पत्नी को दबा के, डरा के, धमका के अपने बस में रखा है।
मोहन - जज साहब ऐसा है कि.....
जज - सफाई नहीं, तरीका बताओ तरीका।

पति - आज ऐसी चाय बनाओ कि पीते ही तन बदन झूमने लगे और मन नाचने लगे ।
पत्नी - हमारे यहाँ भैंस का दूध आता है नागिन का नहीं ...

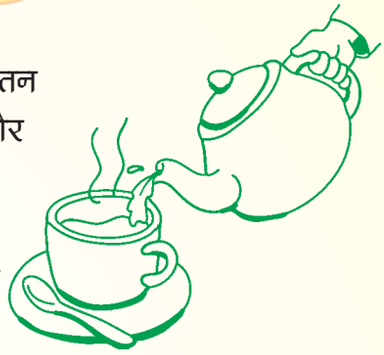

मरीज - डाक्टर साहब, सुबह उठकर साँस लेने में तकलीफ होती है ।
डाक्टर - कितने बजे उठते हो ?
मरीज - ठीक आठ बजे ।
डाक्टर - जल्दी उठा करो .. रामदेव के लोग सुबह छः बजे उठकर सारी ऑक्सीजन खींच लेते हैं ।

पति पत्नी में भयंकर वाक् युद्ध हुआ ।
पति ने क्रोध में आकर कहा - 'मैं पति पद से इस्तीफा देता हूँ ।'
पत्नी ने कहा - 'वैकल्पिक व्यवस्था होने तक पद पर बने रहिये ।'...

एक हैदराबादी परिवार में बेटा स्कूल से रोता हुआ घर आया
मां - काईकू रोरा ?
बेटा - टीचर मारी मेरेकू
मां - काईकू मारी चुड़ैल तेरेकू ?
बेटा - मैं मुर्गी बोला उसकू
मां - अरे काईकू ऐसा बोला रे ?
बेटा - काईकू बोले तो ? हर ईक्जामा में आंडा देरी मेरेकू

एक बार मोहन को कहीं से 100 का नोट मिला। उसने 5 स्टार होटल में जाकर डिनर किया। 3000 रुपए का बिल न चुकाने के कारण मैनेजर ने उसे पुलिस को सौंप दिया। थाने जाते हुए रास्ते में उसने वह सौ का नोट पुलिसवाले को थमाया और छूट गया।

प्रतिष्ठित, सुपरिचित पत्रिका 'अभिव्यक्ति' देखने, पढ़ने का सौभाग्य सुसाहित्य पुस्तकालय में हुआ। प्रत्येक अंक बेहतर से बेहतरीन है। प्रत्येक अंक रुचिकर, ज्ञानवर्धक व पठनीय है। आपके इस सुप्रयास के लिये सम्पादक मंडल बधाई व साधुवाद के पात्र हैं।

– संतोष बी. गुप्ता
विशेष कार्यकारी अधिकारी
सक्करसाथ, अमरावती
444 601

'अभिव्यक्ति' का बत्तीसवाँ अंक इस कार्यालय को प्राप्त हुआ है। इसमें लिखे गए लेख एवं जनेप न्यास के बारे में दी गई जानकारी पठनीय है तथा 'राजभाषा नीति का कार्यान्वयन-समस्याएँ एवं समाधान' एक मार्गदर्शक के रूप में प्रेरित करता है।

– सिद्धेश्वर डोंबे
सहायक निदेशक
वस्त्र आयुक्त का क्षेत्रीय कार्यालय,
सी.बी.डी. बेलापुर, नवी मुंबई

उच्च स्तरीय सामग्री से परिपूर्ण, विविध साहित्य विधा एवं सांस्कृतिक सामाजिक परिवेश को मजबूत बनाते हुए माननीय कल्याण की समन्वय भावना ने पत्रिका को हिन्दी साहित्य जगत में काफी ऊँचे धरातल पर पहुंचा दिया है। राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाने, उसे प्रेरित प्रोत्साहित करने के लिए विविध उपक्रम, उसी प्रकार धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन वाकई प्रशंसनीय व आपसी मेल जोल बढ़ाने में उपयोगी सिद्ध हो रहा है। नवीनतम विचार प्रणाली, बदलते हालात में वचनबद्ध नियोजन तथा समय की पाबन्दी का अटूट पालन 'अभिव्यक्ति' के माध्यम से दृष्टिगोचर होता है। डॉ. भगवान दास पटैरया का विशेष लेख 'राजभाषा नीति का कार्यान्वयन समस्याएँ एवं समाधान' शोधात्मक व बोधप्रद है। श्री के. एस. कराले की कविता 'कहानी' तथा रजनी घरत की 'माँ-एक विश्वास' कविता दिल को छूती हुई एक आत्मीयता का अहसास दिलाती है। पाठक की बौद्धिक क्षमता को परिपुष्ट करती 'अभिव्यक्ति' सम्पूर्ण समाधान का आभास दिलाती है। उत्तरोत्तर प्रगति एवं उन्नति के लिए मनपूर्वक हार्दिक शुभेच्छा।

– प्रा. डॉ. प्रकाश वि. जीवने
नागपुर - 440027

संस्थान में सम्पन्न विविध शासकीय तथा सामयिक क्रियाकलापों को अपने में समाहित करने में पत्रिका पूर्णत: सफल हुई है। विभिन्न आयोजनों के रंगीन छायाचित्रों के प्रकाशन से पत्रिका की सुन्दरता में अपेक्षित सुधार हुआ है। प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट हैं किन्तु श्रीमती भारती ठाकुर द्वारा लिखित 'आधा चंद्रमा' पाठकों के मानसपटल पर अमिट छाप छोड़ने में सफल हुआ है। पत्रिका का संपादन एवं पृष्ठ सज्जा उत्कृष्ट है।

– प्रणव प्रियांक
सहायक कार्यशाला प्रबंधक
मशीनी औजार आदिरूप फैक्टरी
अम्बरनाथ - 421502

'अभिव्यक्ति' वर्ष 2014 अंक 32 की प्राप्ति हुई। पत्रिका के सफल प्रकाशन में संपादक मंडल का सराहनीय कदम है। इस अंक में लेख, कविता एवं छायाचित्र अत्यंत ज्ञानवर्धक तथा रोचक हैं। माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी का अभिभाषण, राजभाषा नीति का कार्यान्वयन-समस्याएँ एवं समाधान, आधा चंद्रमा, मेरे बाद, माँ-एक विश्वास विशेष रूप से पठनीय हैं। पत्रिका का फोटो संग्रह बहुत आकर्षक है। वर्ष 2014-15 आगामी अंक के लिए संपादक मंडल को शुभकामनाएं।

- एम. डी. मीना
सहायक निदेशक
कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
वागले इस्टेट, ठाणे

इस पत्रिका में विविध विषयों पर दी गई लेख सामग्री अति उत्कृष्ट, सारगर्भित एवं पठनीय है। पत्रिका के विविध लेख एवं काव्य रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। इस अंक के प्रकाशन में संपादक मंडल द्वारा किया गया प्रयास अत्यंत सराहनीय एवं प्रशंसनीय है।

- बलिराम ई. दुबे
टी. ओ. - 'सी' एवं राजभाषा अधिकारी
रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन
अंबरनाथ (पूर्व), जिला ठाणे

पत्रिका का मुख्यपृष्ठ, साज सज्जा बहुत आकर्षक है। संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ। पत्रिका में प्रकाशित कंटेनर राजस्व अनुभाग की कार्य प्रणाली, राजभाषा नीति का कार्यान्वयन-समस्या एवं समाधान, कविताएँ (आधार कार्ड, माँ-एक विश्वास) तथा आधा चंद्रमा आलेख रोचक एवं सूचनापरक लगे। आपके द्वारा अभिव्यक्ति का नियमित प्रकाशन हिंदी के प्रचार प्रसार की दिशा में निश्चित ही एक सार्थक एवं सराहनीय प्रयास है। पत्रिका की ई-कॉपी या पी. डी. एफ. अपनी वेबसाइट पर उपलब्ध कराकर आप इसे अधिकाधिक पाठकवर्ग तक पहुंचा सकते हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु आपको शुभकामनाएं।

- डॉ. राकेश शर्मा
हिन्दी अधिकारी
राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान,
दोना पावला, गोवा - 403 004

अभिव्यक्ति का सितम्बर, 2014 वर्ष 10 अंक 32 पाकर बहुत अच्छा लगा। रजत जयन्ती विशेषांक सामग्री पठनीय और रोचक है तथा साज-सज्जा आकर्षक है। पठनीय और ज्ञानवर्धक सामग्री प्रस्तुत करने के लिए सम्पादक मण्डल का प्रयास सराहनीय है। पत्रिका में प्रकाशित विषयों के अनुरूप सही और अच्छे चित्र प्रशंसनीय हैं। राजभाषा के प्रति न्यास के समस्त कर्मिकों की निष्ठा उत्साहवर्द्धक है। पत्रिका को उत्कृष्ट रूप में प्रस्तुत करते रहने हेतु शुभकामनाएं।

- विष्णुवर्मा
ग्राम-ककोली,
पोस्ट-ककोली-224195
जिला - फैजाबाद (उत्तर प्रदेश)

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास, नवी मुंबई के द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का 32 वाँ अंक प्राप्त हुआ। अंक से न्यास के कार्यकलापों के बारे में उपयोगी जानकारी प्राप्त हुई, मौलिक निबंध, काव्य इत्यादि कृतियाँ सराहनीय हैं, 'राजभाषा नीति का कार्यान्वयन-समस्याएँ एवं समाधान' लेख कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु उपयोगी है। जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास, नवी मुंबई के द्वारा राजभाषा के प्रचार प्रसार का कार्य निरंतर होता रहे इन शुभकामनाओं के साथ।

– अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
वेरावल

पत्रिका में प्रकाशित लेख सराहनीय एवं उपयोगी हैं । पत्रिका अपना परिचय पास्तुत करने में पूर्ण रूप से समर्थ है। आपकी पत्रिका में विविध रचनाकृति के अंतर्गत विक्रमादित्य सचिन आखिरी पारी को सलाम आदि सामग्री ज्ञानवर्धक एवं पठनीय है । पत्रिका संपादन से जुड़ी पूरी टीम को हमारी ओर से शुभकानाएँ ।

- डॉ. एस. बी. प्रभुदेसाई
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
गोवा शिपयार्ड लिमिटेड,
वास्को-द-गामा, गोवा

'अभिव्यक्ति' सितम्बर, 2014 का 32वाँ अंक मिला। पत्रिका के रंगीन मुखपृष्ठ पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व गृह मंत्री राजनाथ सिंह के चित्र पत्रिका के रजत जयन्ती हिन्दी दिवस विशेषांक को आकर्षक बना रहे हैं। आप पत्र स्तम्भ की समीक्षा करके पत्रिका के प्रत्येक अंक में निखार ला रहे हैं। रजत जयन्ती एवं पत्तन उपभोक्ता सम्मान समारोह की झलकियाँ व प्रतियोगिता चित्र पत्रिका में चार चांद लगाते हैं। माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी का अभिभाषण संदेश, परिचय, हिन्दी पखवाड़ा उत्सव राजभाषा नीति कार्यान्वयन आदि सभी पत्रिका को उत्कृष्टता प्रदान करते हैं। कहानी आधा चंद्रमा बेहद मार्मिक व सारगर्भित लगी। निबंध व त्रिबाल निबन्ध बेहद लाभप्रद व उपयोगी हैं। कविताएँ स्तरीय, मार्मिक व हृदयस्पर्शी लगीं। संपादक मंडल के अथक परिश्रम से ही पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर हो रही है। उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशन हेतु संपादक मंडल बंधाई के पात्र है। प्रकाशित सामग्री स्तरीय, पठनीय, रोचक, सरस व ज्ञान वर्द्धक है। पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के माध्यम से राजभाषा हिन्दी का प्रचार प्रसार करने में संपादक का प्रयास सराहनीय व वन्दनीय है। मैं इसके उज्ज्वल भविष्य के लिये कामना करता हूँ।

- विजयसिंह बलवान
जटपुरा (जहाँगीराबाद)
बुलन्दशहर (उ.प्र.) भारत 202394

हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है और कोई भी अक्षर वैसा क्यूँ है उसके पीछे कुछ कारण हैं अंग्रेजी भाषा में यह बात देखने में नहीं आती ।

क, ख, ग, घ, ङ - *कंठव्य कहे गए, क्योंकि इनके उच्चारण के समय ध्वनि कंठ से निकलती है ।*
एक बार बोल कर देखिये ।

च, छ, ज, झ, ञ - *तालव्य कहे गए, क्योंकि इनके उच्चरण के समय जीभ तालू से लगती है ।*
एक बार बोल कर देखिये ।

ट, ठ, ड, ण - *मूर्धन्य कहे गए, क्योंकि इनका उच्चरण जीभ के मूर्धा से लगने पर ही सम्भव है ।*
एक बार बोल कर देखिये ।

त, थ, द, ध, न - *दंतीय कहे गए, क्योंकि इनके उच्चरण के समय जीभ दांतों से लगती है ।*
एक बार बोल कर देखिये ।

प, फ, ब, भ, म - *औष्ठ्य कहे गए, क्योंकि इनका उच्चारण ओठों के मिलने पर ही होता है ।*
एक बार बोल कर देखिये ।

हम अपनी भाषा पर गर्व करते हैं यह सही है परन्तु लोगों को इसका कारण भी बताइये । इतनी वैज्ञानिकता दुनिया की किसी भाषा में नहीं है ।

- वैश्विक हिन्दी सम्मेलन से साभार

जनेप न्यास में नवी मुंबई नराकास
काव्य संगोष्ठी की झलकियाँ

सतर्कता जागरूकता सप्ताह की झलकियाँ

मुद्रक: मुंबई. मो: 9819858987